www.sanjanabharati.com

दिल्ली और गौतम बुद्ध नगर से प्रकाशित। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड व उत्तराखंड में प्रसारित

facebook.com/Sanjanabharati

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

संजना भारती

RNI No. : DELHIN/2016/70240

आपका भरोसा, हमारी ताकत

2 सत्ता लोलुपता से आई कांग्रेस बिखराव के...

3 जीवन के हर मोड़ पर साथ निभाता है प्यार...

4 एचआईवी एड्स को हराने के लिए जन-जन...

वर्ष: 10 | अंक: 39 | दिल्ली, मंगलवार, 2 दिसम्बर 2025 | पृष्ठ संख्या: 4 | मूल्य: 1 रुपया

प्रधानमंत्री ने संसद के शीतकालीन सत्र 2025 से पहले मीडिया को किया संबोधित

यह शीतकालीन सत्र देश को और भी तेज गति से आगे बढ़ाने के हमारे प्रयासों में एक नई ऊर्जा का संचार करेगा : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

संजना भारती/पीआईबी

नई दिल्ली। सोमवार को संसद परिसर में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शीतकालीन सत्र 2025 के आरंभ से पूर्व मीडिया को संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि यह सत्र केवल एक औपचारिकता नहीं है, बल्कि राष्ट्र की तीव्र प्रगति की चल रही यात्रा के लिए नई ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। प्रधानमंत्री ने कहा की, "यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह सत्र राष्ट्र की प्रगति में तेजी लाने के लिए वर्तमान में चल रहे प्रयासों में एक नई ऊर्जा का संचार करेगा।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत ने लगातार अपनी लोकतांत्रिक परंपराओं की जीवंतता और भावना का प्रदर्शन किया है। हाल ही में हुए बिहार चुनावों का उदाहरण देते हुए, उन्होंने रिकॉर्ड तोड़ मतदाता भागीदारी की सराहना की और इसे राष्ट्र की लोकतांत्रिक शक्ति का एक प्रबल प्रमाण बताया। उन्होंने महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी पर भी प्रकाश डाला और इसे एक उल्लेखनीय तथा उत्साहजनक प्रवृत्ति बताया, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया में नई आशा और नया विश्वास लाती है। उन्होंने उल्लेख किया कि जैसे-जैसे भारत के लोकतांत्रिक संस्थान मजबूत हो रहे हैं, दुनिया बहुत बारीकी से देख रही है कि यह लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं किस प्रकार राष्ट्र की आर्थिक क्षमताओं को भी सुदृढ़ कर रही हैं। प्रधानमंत्री ने कहा "भारत ने यह सिद्ध कर दिया है कि लोकतंत्र सफल परिणाम दे सकता है।" श्री मोदी ने जोर देकर कहा, "जिस गति से भारत की आर्थिक स्थितियाँ नई ऊँचाइयों को छू रही हैं, वह नया विश्वास जगाती है और विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए हमें नई शक्ति देती है।" प्रधानमंत्री ने सभी राजनीतिक दलों से आग्रह किया कि वे सत्र को राष्ट्रीय हित, रचनात्मक चर्चा और नीति-आधारित परिणामों पर केंद्रित रखें। उन्होंने जोर देकर कहा कि संसद को इस बात पर ध्यान केंद्रित रहना चाहिए कि वह राष्ट्र के लिए क्या कल्पना करती है और राष्ट्र के लिए क्या करना चाहती है। विपक्ष से अपनी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी निभाने का आह्वान करते हुए, प्रधानमंत्री ने उन्हें सार्थक और महत्वपूर्ण मुद्दे उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने दलों को आगाह किया कि वे चुनावी हार की निराशा को संसदीय कार्यवाही पर हावी न होने दें। श्री मोदी ने इस बात पर भी जोर दिया कि सत्र में चुनावी जीत से उपजा अहंकार भी नहीं झलकना चाहिए। उन्होंने कहा, 'शीतकालीन सत्र में संतुलन, जिम्मेदारी, और जनप्रतिनिधियों से अपेक्षित गरिमा झलकनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने जानकारी वाली चर्चा के महत्व पर प्रकाश डाला और सदस्यों से आग्रह किया कि जो अच्छा काम हो रहा है उन्हें और बेहतर बनाया जाए और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ रचनात्मक और सटीक आलोचना प्रस्तुत की जाए, ताकि नागरिकों को बेहतर जानकारी मिल सके। उन्होंने कहा, 'यह मेहनत का काम है, लेकिन राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है।'

नई दिल्ली स्थित संसद भवन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संसद के शीतकालीन सत्र से पहले मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए।

पहली बार चुने गए और युवा सांसदों के लिए चिंता व्यक्त करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि कई अलग-अलग पार्टियों के कई सांसद महसूस करते हैं कि उन्हें अपने निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने या राष्ट्रीय विकास की चर्चाओं में योगदान देने के लिए पर्याप्त अवसर नहीं मिल रहे हैं। उन्होंने सभी दलों से आग्रह किया कि वे सुनिश्चित करें कि इन सांसदों को वह मंच मिले जिसके वे हकदार हैं। उन्होंने कहा, 'सदन और राष्ट्र, दोनों को नई पीढ़ी की समझ और ऊर्जा से लाभ मिलना चाहिए।'

चाहे कोई भी दल क्यों न हो, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सांसदों की नई पीढ़ी और पहली बार संसद में चुनकर आए सदस्यों को सार्थक अवसर मिलें- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि संसद नीति (पॉलिसी) और परिणामों (डिलीवरी) के लिए है, न कि ड्रामा या नारेबाजी के लिए। उन्होंने कहा, 'ड्रामा करने या नारेबाजी के लिए अन्य जगहों की कोई कमी नहीं है। संसद में, हमारा ध्यान नीति पर केंद्रित होना चाहिए और हमारा इरादा स्पष्ट होना चाहिए।'

प्रधानमंत्री ने इस सत्र के विशेष महत्व को रेखांकित किया, क्योंकि यह सत्र उच्च सदन में नए माननीय सभापति महोदय के मार्गदर्शन की शुरूआत है। प्रधानमंत्री ने सभापति को बधाई दी और विश्वास व्यक्त किया कि उनका नेतृत्व संसदीय कामकाज को और भी मजबूत करेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जीएसटी सुधारों ने नागरिकों के बीच विश्वास का एक मजबूत माहौल बनाया है और इन्हें अगली पीढ़ी के सुधारों के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि शीतकालीन सत्र इसी दिशा में कई महत्वपूर्ण पहलों को आगे बढ़ाने के लिए तैयार है।

हालिया संसदीय प्रवृत्तियों पर चिंता व्यक्त करते हुए, श्री मोदी ने कहा कि हाल के दिनों में, हमारी संसद का उपयोग या तो चुनावों के लिए 'वॉर्म-अप ग्राउंड' के रूप में किया जा रहा है या फिर चुनावी हार के बाद निराशा निकालने की जगह के रूप में। प्रधानमंत्री ने कहा, 'देश ने इन तरीकों को स्वीकार नहीं किया है। अब समय आ गया है कि वे अपना दृष्टिकोण और रणनीति बदलें। मैं तो उन्हें बेहतर प्रदर्शन करने के तरीके पर सुझाव देने के लिए भी तैयार हूँ।'

श्री मोदी ने दोहराया, 'मुझे उम्मीद है कि हम सभी इन जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ेंगे। और मैं राष्ट्र को यह आश्वासन देता हूँ कि देश प्रगति के मार्ग पर चल पड़ा है।' राष्ट्र की प्रगति की निर्धारित यात्रा की पुष्टि करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा, 'देश नई ऊँचाइयों की ओर बढ़ रहा है और यह सदन उस यात्रा में नई ऊर्जा और शक्ति भरने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।'

संक्षिप्त समाचार

वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ पर लोकसभा में होगी ऐतिहासिक बहस

नई दिल्ली (एजेन्सी)। वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में इस सप्ताह के अंत में लोकसभा में एक विशेष चर्चा आयोजित होने की संभावना है। इस अवसर पर सदस्यों को स्वतंत्रता आंदोलन में इस देशभक्ति गीत की भूमिका और इसकी समकालीन प्रासंगिकता के अलावा भारत की सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने का अवसर मिलेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस चर्चा में भाग लेने की संभावना है। एक वरिष्ठ सांसद ने बताया कि वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में इस सप्ताह के अंत में लोकसभा में एक विस्तृत और विशेष चर्चा आयोजित होने की संभावना है। सांसद ने बताया कि यह चर्चा संसद के शीतकालीन सत्र का एक प्रमुख आकर्षण होने की उम्मीद है। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता आंदोलन में वंदे मातरम की भूमिका और समकालीन भारत में इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा करने का अवसर प्रदान करेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भी इस चर्चा में भाग लेने की संभावना है।

'मुसलमानों को भड़काने की साज़िश' : शाहनवाज हुसैन का महमूद मदनी पर गंभीर आरोप

नई दिल्ली (एजेन्सी)। भाजपा नेता शाहनवाज हुसैन ने सोमवार को जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी की भोपाल में की गई हालिया टिप्पणी की कड़ी आलोचना की। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारतीय मुसलमानों को बेजोड़ अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त है। साथ ही, उन्होंने समुदाय को भड़काने की कोशिशों के खिलाफ चेतावनी भी दी। "जुल्म के खिलाफ जिहाद" संबंधी मदनी की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए, हुसैन ने बयान की निंदा की और इसे भ्रामक और खतरनाक बताया। हुसैन ने कहा कि मैं जमीयत उलेमा-ए-हिंद के नेता मौलाना महमूद मदनी द्वारा भोपाल में इस्तेमाल की गई भाषा की निंदा करता हूँ। उन्होंने कहा, 'जब भी जुल्म होगा, जिहाद होगा। यह कहकर कि जब भी जुल्म होगा, जिहाद होगा, वह क्या समझा रहे हैं? भारत में जुल्म कहाँ हो रहा है? मदनी पर मुसलमानों में अविश्वास और अशांति पैदा करने का आरोप लगाते हुए, हुसैन ने कहा कि मुसलमानों को भड़काने की साज़िश मत करो। वे मुसलमानों को भड़का रहे हैं और उन्हें टकराव के रास्ते पर ले जाना चाहते हैं।

धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र से गूंजा गीता का संदेश, अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के दौरान 21 हजार बच्चों सहित विभिन्न देशों में हुआ वैश्विक गीता पाठ

'गीता का संदेश कालातीत, यह केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत'

संजना भारती संवाददाता

चंडीगढ़। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत सोमवार को धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र के केशव पार्क में भव्य और ऐतिहासिक वैश्विक गीता पाठ आयोजित किया गया। इस सामूहिक पाठ में 21 हजार बच्चों ने एक स्वर में गीता के श्लोकों का उच्चारण कर वह दिव्य दृश्य प्रस्तुत किया, जिसने पूरे वातावरण को ज्ञान, भक्ति और अध्यात्म से सराबोर कर दिया। इस अभूतपूर्व सहभागिता ने वसुधैव कुटुम्बकम की भारतीय अवधारणा को साकार रूप दिया। इस कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने शिरकत की। मुख्यमंत्री ने कुरुक्षेत्र में वैश्विक गीता पाठ में भाग लेने वाले स्कूली छात्रों के लिए मंगलवार को विशेष अवकाश की भी घोषणा की। इस अवसर पर योग गुरु बाबा रामदेव और गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज भी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी एवं गीता जयंती के पावन पर्व की शुभकामनाएं देते हुए भगवान श्री कृष्ण से नागरिकों के जीवन को ज्ञान के आलोक से आलोकित करने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि इसी शुभ तिथि पर 5163 वर्ष पूर्व भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को श्रीमद्भगवद् गीता का दिव्य उपदेश दिया, जिसका संदेश आज भी संपूर्ण मानवता के लिए पथप्रदर्शक है। आज 21 हजार विद्यार्थियों द्वारा अष्टादशी श्लोकों के जाप से आकाश गूंज उठा है। यह गर्व की बात है कि आज भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा अनेक देशों में भी एक साथ इन श्लोकों के स्वर गूंज रहे हैं। उन्होंने कहा कि गीता पाठ का महत्व केवल धार्मिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक भी है। वेद, उपनिषद और गीता के मंत्रों के उच्चारण से उत्पन्न होने वाली सकारात्मक ध्वनि तरंगें मन और मस्तिष्क को शांति प्रदान करती हैं, विचारों में नैतिकता लाती हैं और व्यक्ति को नई ऊर्जा प्रदान करती हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कर्मयोगी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की ही प्रेरणा से हम गीता जयंती समारोह को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाते हैं। उन्होंने वर्ष 2014 में अमेरिका की अपनी प्रथम यात्रा के दौरान 19 सितम्बर, 2014 को अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा को श्री महादेव देसाई द्वारा लिखित पुस्तक "The Gita According to Gandhi" भेंट की। इस अद्भुत पहल से प्रेरित होकर हम वार्षिक गीता जयंती समारोह को वर्ष 2016 से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने लगे हैं। इसमें कई देशों के प्रतिभागी और लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं। उन्होंने कहा कि 25 नवंबर को प्रधानमंत्री कुरुक्षेत्र में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में शामिल हुए और महाभारत थीम आधारित अनुभव केंद्र का लोकार्पण किया। प्रधानमंत्री ने 28 नवंबर को कर्नाटक के उडुपी में भी इस अनुभव केंद्र का उल्लेख करते हुए देशवासियों से इसे देखने का आग्रह किया। आज यह महोत्सव उनके मार्गदर्शन में विश्वव्यापी स्वरूप ले चुका है।इस मौके पर बाबा भूपेंद्र सिंह, स्वामी मास्टर महाराज, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा, राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान की निदेशिका डॉ. रमणीक कौर, पूर्व राज्यमंत्री श्री सुभाष सुधा ने भी अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम में हरियाणा गौ सेवा आयोग के चेयरमैन श्रवण गर्ग, हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष धुमन सिंह किरमच, चेयरमैन जयदीप आर्य, चेयरमैन धर्मवीर मिजार्पुर, सीएम के ओएसडी भारत भूषण भारती, स्वामी संपूर्णानंद महाराज, आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति करतार सिंह धीमान सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

विपक्ष का संसद में हंगामे का ऐलान : चुनाव सुधारों पर चर्चा की मांग

नई दिल्ली (एजेन्सी)। विपक्षी सांसद 2 दिसंबर (मंगलवार) को सुबह 10:30 बजे संसद भवन के मकर द्वार के सामने चुनावी सुधारों पर चर्चा की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। लोकसभा के शीतकालीन सत्र के पहले दिन विपक्षी दलों ने चुनावी धोखाधड़ी का आरोप लगाते हुए बार-बार नारेबाजी की। कई विपक्षी नेताओं ने सदन में "वोट चोर, गद्दी छोड़" के नारे लगाए और साथ ही देश भर में मतदाता सूची के चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर चर्चा की मांग की। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने संसद के चल रहे शीतकालीन सत्र को लेकर केंद्र सरकार की तीखी आलोचना की और उस पर सदन में सभी सार्थक चर्चाओं से बचने का आरोप लगाया। उन्होंने सवाल किया कि अगर सरकार विपक्ष द्वारा उठाए गए एक भी मुद्दे पर चर्चा करने से इनकार कर दे, तो संसद कैसे चलेगी। पत्रकारों से बात करते हुए, कांग्रेस सांसद ने कहा कि सरकार किसी भी मुद्दे पर चर्चा नहीं चाहती। फिर सदन कैसे चलेगा? उन्हें कम से कम हमारी एक बात तो सुननी चाहिए। अगर एसआईआर पर नहीं, तो चुनाव सुधार या किसी अन्य संबंधित मुद्दे पर चर्चा हो सकती है। अगर वे किसी मुद्दे पर चर्चा नहीं करेंगे तो सदन कैसे चलेगा?

आमजन की समस्याओं के समाधान पर निगरानी रखें जनपदों में तैनात पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी: योगी आदित्यनाथ

संजना भारती संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को जनता दर्शन किया। मुख्यमंत्री ने प्रदेश भर से आए हर पीड़ित से स्वयं मुलाकात की, उनका प्रार्थना पत्र लिया और समस्याओं के निदान का आश्वासन किया। मुख्यमंत्री ने जनपद में तैनात पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों को निर्देशित किया कि पीड़ितों की समस्याओं के स्थानीय स्तर पर समाधान पर विशेष जोर रहे। पुलिस से जुड़े मामलों में निष्पक्षता व पारदर्शिता पूर्वक कार्रवाई पर अधिकारी विशेष ध्यान दें।

जनता दर्शन में 42 से अधिक फरियादी पहुंचे। मुख्यमंत्री ने हर एक से मिलकर उनकी समस्याएं जानीं और उचित कार्रवाई के लिए आश्वस्त किया। जनता दर्शन में जमीनी विवाद, राजस्व व पुलिस से संबंधित भी कई मामले आए। इस पर सीएम ने निर्देश दिया कि पुलिस कार्रवाई निष्पक्षता व पारदर्शिता से सुनिश्चित की जाए। पुलिस आयुक्त, एडीजी, एसएसपी व एसपी जनता की समस्याओं की निगरानी रखें और प्रमुखता से उसके निस्तारण पर ध्यान दें।

दो पीड़ितों ने मुख्यमंत्री से अतिरिक्त आर्थिक सहायता की गुहार लगाई। इस पर मुख्यमंत्री ने दोनों फरियादियों को मदद का आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार हर पीड़ित की मदद के लिए खड़ी है। चिकित्सा के लिए नियमित रूप से पीड़ितों को आर्थिक मदद की जा रही है। आप भी एस्टिमेट बनवाकर उपलब्ध कराएं, सरकार मदद करेगी। जनता दर्शन में अभिभावकों के साथ कुछ बच्चे भी आए। मुख्यमंत्री ने उन बच्चों को अपनत्व से दुलारा-पुचकारा, फिर उन्हें चॉकलेट दी।

सीएम योगी आदित्यनाथ जी ने कुछ बच्चों का हालचाल भी जाना। सीएम ने उन्हें मन लगाकर पढ़ने और खूब नाम करने का आशीर्वाद दिया।

श्री खाटू श्याम मंदिर में मोक्षदा एकादशी पर भजन-कीर्तन और भंडारे का आयोजन

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। शहर की पुरानी अनाज मंडी स्थित श्री खाटू श्याम मंदिर में सोमवार को मोक्षदा एकादशी धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस शुभ अवसर पर मंदिर परिसर और बाबा श्याम के स्वरूप को फूलों से भव्य रूप से सजाया गया। सुबह से ही भक्तों की लंबी कतारें दर्शन के लिए लगी रहीं और वातावरण श्याम नाम के जयकारों से गूंजता रहा।

एकादशी पर विशेष भजन-कीर्तन और भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें भजन गायकों ने बाबा श्याम की महिमा का गुणगान कर श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। संध्या आरती के दौरान पूरा मंदिर परिसर भक्तिरस में डूब गया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं को अजा/मोक्षदा एकादशी का महत्व भी बताया गया। मंदिर में आयोजित विशेष पूजा-अर्चना के दौरान पंडित दीपक पांडे ने भक्तों के साथ मिलकर भगवान विष्णु की आराधना की और भगवद गीता का पाठ किया। उन्होंने बताया कि मोक्षदा एकादशी के दिन ही भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था, इसलिए इस दिन गीता जयंती भी मनाई जाती है। भक्त उपवास, मंदिर दर्शन और सेवा कार्यों के माध्यम से पुण्य अर्जित करते हैं।

मुख्य सेवक देसराज गुप्ता ने बताया कि प्रत्येक एकादशी पर मंदिर में भजन-कीर्तन आयोजित होता है और करनाल सहित दूर-दराज से बड़ी संख्या में श्रद्धालु बाबा श्याम के दर्शन करने आते हैं। कार्यक्रम में देसराज गुप्ता, राजेश गर्ग, महेंद्र गुप्ता, अनिल गर्ग, राम करण गोयल, अशोक सिंघला, अनुपम त्रिपाठी, पंडित उमेश पांडे, पवन गुप्ता, राजेश सिंघला, हरीश सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

सेक्टर-32 व सेक्टर-9 पार्ट-2 की गलियों का सुदृढ़ीकरण कार्य शुरू

विधायक रामकुमार कश्यप और मेयर रेनू बाला गुप्ता ने किया शुभारंभ, 5.57 करोड़ रुपये होगी लागत

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। इन्द्री के विधायक एवं गवर्नमेंट चीफ व्हिप रामकुमार कश्यप और करनाल की महापौर रेनू बाला गुप्ता ने सोमवार को संयुक्त रूप से सेक्टर-32 और सेक्टर-9 पार्ट-2 की गलियों के सुदृढ़ीकरण कार्य का शुभारंभ किया। इन गलियों का निर्माण हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवीपी) करनाल द्वारा करवाया जाएगा। लगभग 18 किलोमीटर लंबाई में बनने वाले इन कार्यों पर 5 करोड़ 57 लाख 77 हजार 454 रुपये की लागत आएगी। यह निर्माण कार्य लगभग छह माह में पूरा होने की संभावना है।

शुभारंभ अवसर पर विधायक रामकुमार कश्यप ने कहा कि गलियों के दुरुस्त होने से सेक्टर वासियों का आवागमन सुचारू होगा और उन्हें दैनिक जीवन में बड़ी सुविधा मिलेगी। उन्होंने बताया कि शहर में नागरिकों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए करोड़ों रुपये की परियोजनाओं पर काम जारी है, जिसका लाभ सीधे जनता को मिलेगा। मेयर रेनू बाला गुप्ता ने स्थानीय निवासियों को शुभारंभ की बधाई देते हुए कहा कि विकास की दिशा में करनाल शहर तेजी से आगे बढ़ रहा है। सड़कों और गलियों का निर्माण किसी भी क्षेत्र के विकास की रीढ़ होता है। उन्होंने कहा कि गलियों के पक्का होने से स्थानीय लोगों के साथ-साथ बाहर से आने वाले वाहन चालकों को भी बेहतर सुविधा मिलेगी। मेयर ने यह भी कहा कि पारदर्शिता बनाए रखने के लिए प्रत्येक परियोजना स्थल पर सूचना बोर्ड लगाया जाता है, जिसमें कार्य से संबंधित सभी विवरण दर्ज रहते हैं। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे कार्य की गुणवत्ता पर निगरानी रखें और यदि किसी प्रकार की कमी दिखाई दे, तो तुरंत संबंधित इंजीनियर या पार्षद को सूचित करें ताकि समय रहते सुधार किया जा सके।

इस अवसर पर वार्ड 2 पार्षद प्रतिनिधि नरेश पाल, एचएसवीपी के अधीक्षण अभियंता धर्मवीर सिंह, उपमंडल अभियंता-1 सुखविंद्र सिंह, कनिष्ठ अभियंता रजनीश कुमार सहित रोशन पाल, ईलम सिंह, दिनेश आर्य तथा क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोग और महिलाएं मौजूद रहीं।

सम्पादकीय

समस्त गांवों को सहकारिता से जोड़ने का प्रयास

भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है और हिंदू सनातन संस्कृति के संस्कारों का अनुपालन करते हुए ग्रामीण इलाकों में निवास कर रहे नागरिक आपस में भाई-चारे के साथ मिलजुलकर रहते आए हैं। इस दृष्टि से देखा जाय तो सहकार की भावना हम भारतीयों के डीएनए में है। इसी विषय के दृष्टिगत एक बार पुनः आज भारत के प्रत्येक गांव को खुशहाल एवं समृद्ध बनाने की लिए समस्त गांवों को सहकारिता से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। सहकार से समृद्धि का नारा भी इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर दिया गया है। भारत में आज सहकारी समितियों की स्थापना को बढ़ावा दिया जा रहा है क्योंकि भारत में सहकारी समितयां, स्व-सहायता, स्व-जिम्मेदारी, लोकतंत्र, समानता, न्याय एवं एकजुटता जैसे भारतीय मूल्यों के आधार पर कार्य करती हुई दिखाई देती हैं। साथ ही, जिन 7 सिद्धांतों के आधार पर इन समितियों के कार्य करने की अपेक्षा रहती है, उससे इन समितियों के सफल होने की सम्भावना बढ़ जाती है। यह 7 सिद्धांत हैं – खुली और स्वैच्छिक सदस्यता; लोकतांत्रिक तरीके से सदस्यों की भागीदारी; सदस्यों की आर्थिक भागीदारी; स्वायत्तता और स्वतंत्रता; शिक्षा, प्रशिक्षण और सूचना; कोआपरेटिव के बीच सहयोग; समुदाय के प्रति सरोकार। सहकारिता वह संगठन है जिसके द्वारा दो या दो से अधिक व्यक्ति स्वैच्छापूर्ण मिलजुल कर समान स्तर पर आपसी आर्थिक हितों की वृद्धि करते हैं। इस प्रकार सहकारिता उस आर्थिक व्यवस्था को कहते हैं जिसमें मनुष्य किसी आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मिलजुल कर कार्य करते हैं। समृद्धि केवल धन-संपत्ति से कहीं अधिक है, यह तब होती है जब सभी लोगों को फलने-फूलने का अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त होती है। समृद्धि एक समावेशी समाज पर आधारित होती है, जिसमें एक मजबूत सामाजिक अनुबंध होता है जो प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत स्वतंत्रता और सुरक्षा की रक्षा करता है। सहकारिता का मुख्य उद्देश्य सदस्यों के जीवन को बेहतर बनाना और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। यह एक ऐसा संगठन है जो सदस्यों को सशक्त बनाता है और उन्हें अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक साथ काम करने का अवसर प्रदान करता है। भारत में आर्थिक विकास को गति देने के उद्देश्य से सहकारिता आंदोलन को सफल बनाना बहुत जरूरी है। वैसे तो हमारे देश में सहकारिता आंदोलन की शुरूआत वर्ष 1904 से हुई है एवं तब से आज तक सहकारी क्षेत्र में लाखों समितियों की स्थापना हुई है। कुछ अत्यधिक सफल रही हैं, जैसे अमूल डेयरी, परंतु इस प्रकार की सफलता की कहानियां बहुत कम ही रही हैं। कहा जाता है कि देश में सहकारिता आंदोलन को जिस तरह से सफल होना चाहिए था, वैसा हुआ नहीं है। बल्कि, भारत में सहकारिता आंदोलन में कई प्रकार की कमियां ही दिखाई दी हैं। देश की अर्थव्यवस्था को शीघ्र ही यदि 5 लाख करोड़ अमेरिकी डालर के आकार का बनना है तो देश में सहकारिता आंदोलन को सफल बनाना ही होगा। इस दृष्टि से केंद्र सरकार द्वारा एक नए सहकारिता मंत्रालय का गठन भी किया गया है। विशेष रूप से गठित किए गए इस सहकारिता मंत्रालय से अब सहकार से समृद्धि की परिकल्पना के साकार होने की उम्मीद भी की जा रही है। भारत में सहकारिता आंदोलन का यदि सहकारिता की संरचना की दृष्टि से आंकलन किया जाय तो ध्यान में आता है कि देश में लगभग 8.5 लाख से अधिक सहकारी साख समितियां कार्यरत हैं। इन समितियों में कुल सदस्य संख्या लगभग 28 करोड़ है। हमारे देश में 55 किस्मों की सहकारी समितियां विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। जैसे, देश में 1.5 लाख प्राथमिक दुग्ध सहकारी समितियां कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त 93,000 प्राथमिक कृषि सहकारी साख समितियां कार्यरत हैं। ये मुख्य रूप से ग्रामीण इलाकों में कार्य करती हैं। इन दोनों प्रकार की लगभग 2.5 लाख सहकारी समितियां ग्रामीण इलाकों को अपनी कर्मभूमि बनाकर इन इलाकों की 75 प्रतिशत जनसंख्या को अपने दायरे में लिए हुए है। उक्त के अलावा देश में सहकारी साख समितियां भी कार्यरत हैं और यह तीन प्रकार की हैं। एक तो वे जो अपनी सेवाएं शहरी इलाकों में प्रदान कर रही हैं। दूसरे वे हैं जो ग्रामीण इलाकों में तो अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं, परंतु कृषि क्षेत्र में ऋण प्रदान नहीं करती हैं। तीसरी वे हैं जो उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों एवं कर्मचारियों की वित्त सम्बंधी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करती हैं। इसी प्रकार देश में महिला सहकारी साख समितियां भी कार्यरत हैं। इनकी संख्या भी लगभग एक लाख है। मछली पालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मछली सहकारी साख समितियां भी स्थापित की गई हैं, इनकी संख्या कुछ कम है। ये समितियां मुख्यतः देश में समुद्र के आसपास के इलाकों में स्थापित की गई हैं। देश में बुनकर सहकारी साख समितियां भी गठित की गई हैं, इनकी संख्या भी लगभग 35,000 है। इसके अतिरिक्त हाउसिंग सहकारी समितियां भी कार्यरत हैं। संचालन और कार्यों की प्रकृति के आधार पर मुख्यतः छह प्रकार की सहकारी समितियां होती हैं। इनमें उपभोक्ता सहकारी समितियां, उत्पादक सहकारी समितियां, विपणन सहकारी समितियां, कृषक सहकारी समितियां, ऋण सहकारी समितियां और सहकारी आवास समितियां शामिल हैं। उक्त वर्णित विभिन क्षेत्रों में कार्यरत सहकारी समितियों के अतिरिक्त देश में सहकारी क्षेत्र में तीन प्रकार के बैंक भी कार्यरत हैं। एक, प्राथमिक शहरी सहकारी बैंक जिनकी संख्या 1550 है और ये देश के लगभग सभी जिलों में कार्यरत हैं।

जयंती

बाबा राघवदास

जन्म: 2 दिसंबर, 1886, पुणे, महाराष्ट्र; मृत्यु: 15 जनवरी, 1958, जबलपुर, मध्यप्रदेश) उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध जनसेवक तथा संत थे। ये हिन्दी के प्रचारक भी थे और इस काम के लिए इन्होंने बरहज आश्रम में राष्ट्र भाषा विद्यालय खोला। बाबा राघवदास ने स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया और इस दौरान इन्हेंने कई बार जेल की सजाएं भोगी।

पुण्यतिथि

देवेन वर्मा

जन्म–23 अक्टूबर, 1937; मृत्यु–2 दिसम्बर, 2014, पुणे, महाराष्ट्र, भारतीय सिनेमा में हिन्दी फि ल्मों के प्रसिद्ध हास्य अभिनेता थे। उन्होंने हिन्दी फि ल्मों में अपने शानदार हास्य अभिनय से सभी का दिल जीत लिया था। देवेन वर्मा ने लगभग 149 फि ल्मों में काम किया। 'गोलमाल', 'अंगूर', 'खट्टा मीठा', 'नास्तिक', 'रंग बिरंगी' आदि उनके कॅरियर की बड़ी फिल्मों में से एक रही थीं। 'बेशर्म' सहित कुछ फिल्मों का निर्माण और निर्देशन भी उन्होंने किया था। 'चोरी मेरा काम', 'चोर के घर चोर' तथा 'अंगूर' फि ल्मों के लिए उन्हें बेस्ट कॉमेडियन के फिल्मफेयर अवॉर्ड से भी नवाजा.गया था।

कल मिलेंगे

इतिहास के टीचर ने चिंटू से पूछा–अकबर का जन्म कब हुआ था?
चिंटू–सर मैं तो स्कूल पढ़ने आता हूं, डिलेवरी थोड़ी कराता हूं
चिंटू का जवाब सुनकर टीचर के होश उड़ गए...

संजना भारती दैनिक

भगवान शंकर जी के 11वें रुद्रावतार हनुमान जी (मेंहदीपुर, श्री बाला जी) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक-**संजय कुमार** द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-41, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा ए-281सी, गली नं. 3, ए-ब्लॉक, अम्बिका विहार, शिव विहार, दिल्ली-110094 से प्रकाशित। इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत संपादक उत्तरदायी।

RNI No. : DELHIN/2016/70240

Phone No.: 9871221635

E-mail ID: sanjanabharati16@gmail.com

(किसी भी वाद-विवाद में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।)

सत्ता लोलुपता से आई कांग्रेस बिखराव के कगार पर

-योगेन्द्र योगी

साल 1922 में चौरी चौरा कांड की वजह से गांधी जी ने असयोग आंदोलन वापस ले लिया था। ये कांग्रेस के अंदर ही कुछ नेताओं को अच्छा नहीं लगा क्योंकि उनको लगता था। ये आंदोलन अंग्रेज सरकार को उखाड़ फेंकने की स्थिति में आ गया था। इसके बाद इसी साल गया कांग्रेस अधिवेशन हुआ जिसमें तय किया गया कि कांग्रेस के नेता विधान परिषद के चुनाव में हिस्सा नहीं लेंगे। इस फैसले से चितरंजन दास नाराज हो गए

कर्नाटक में सत्ता के लिए मचा संग्राम कांग्रेस की जगहसाई का कारण बन गया है। मुख्यमंत्री पद के लिए चल रही मारामारी से जाहिर है कि कांग्रेस का अनुशासन से कोई वास्ता नहीं रह गया है। सत्ता की कमजोरी कांग्रेस के बिखराव का कारण बनी हुई है। शिवकुमार धड़ा 2023 में सरकार बनाने के समय तय फॉम्र्युला को लागू करने की मांग कर रहा है। यह निश्चित है कि यदि शिवकुमार को कर्नाटक के मुख्यमंत्री का पद नहीं मिला तो पार्टी में विद्रोह के हालात पैदा होंगे। पहला मौका नहीं है जब कांग्रेस में सत्ता को लेकर घमासान मचा हुआ है। कांग्रेस अपने स्थापनाकाल से 70 बार टूटी-बिखरी है। कई बड़े नेताओं ने पार्टी का साथ छोड़ दिया है। पार्टी अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही है।

वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद से कांग्रेस के अंदर संकट गहराता चला जा रहा है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में चुनावी सफलताओं को छोड़ दें बीते 8 सालों में देश की सबसे पुरानी पार्टी की हालत लस्त-पस्त नजर आ रही है। एक ओर जहां कांग्रेस अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव की तैयारी कर रही थी तो दूसरी ओर इस पद के दावेदार अशोक गहलोत के समर्थकों ने ही बगावत का झंडा उठा लिया था। सचिन पायलट 28 विधायकों के साथ बागी हो गए थे वो अब कांग्रेस के सिपहसालार नजर आ रहे हैं तो दूसरी ओर गांधी परिवार के बेहद करीबी अशोक गहलोत ने अपने ही समर्थक विधायकों की बगावत पर हाथ खड़े कर दिए।

कांग्रेस में टूट और बगावतों का इतिहास एक लंबा चौड़ा इतिहास रहा है। कांग्रेस का इतिहास ऐसी ढेरों घटनाओं से भरा हुआ, जब कांग्रेस की सत्ता को लेकर हुई टूट से किरकिरी हुई है। मोतीलाल नेहरू और सुभाष से लेकर गुलाम नबी आजाद तक, कांग्रेस में विद्रोह और टूटने इतिहास रहा है। 28 दिसंबर 1985 को अंग्रेज अधिकारी एओ ह्यून की अध्यक्षता में कांग्रेस का गठन किया गय था। इसमें दादा भाई नौरोजी और दिनशा वाचा भी शामिल थे। कांग्रेस का पहला अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी को बनाया गया था। कांग्रेस बनाने की उद्देश्य ब्रिटिश सरकार और भारत के नेताओं और आम जनता के बीच संवाद कायम करना था। लेकिन बाद में यह पार्टी आजादी के आंदोलन का सबसे प्रमुख मंच बन गई।

साल 1922 में चौरी चौरा कांड की वजह से गांधी जी ने असयोग आंदोलन वापस ले लिया था। ये कांग्रेस के अंदर ही कुछ नेताओं को अच्छा नहीं लगा क्योंकि उनको लगता था। ये आंदोलन अंग्रेज सरकार को उखाड़ फेंकने की स्थिति में आ गया था। इसके बाद इसी साल गया कांग्रेस अधिवेशन हुआ जिसमें तय किया गया कि कांग्रेस के नेता विधान परिषद के चुनाव में हिस्सा नहीं लेंगे। इस फैसले से चितरंजन दास नाराज हो गए। खास बात ये थी कि अधिवेशन उन्हीं की अध्यक्षता में हो रहा था। उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी। अगले साल यानी 1923 में उन्होंने नरसिंह चिंतामन केलकर और मोतीलाल नेहरू बिट्ठलभाई पटेल के साथ मिलकर कांग्रेस स्वराज्य पार्टी का गठन किया। जिसके अध्यक्ष चित्तरंजन दास और महासचिव मोतीलाल नेहरू सचिव बनाए गए।

गांधी जी सुभाष चंद्र बोस की नीतियों से सहमत नहीं थे। वो सुभाष की जगह किसी और को कांग्रेस अध्यक्ष बनाना चाहते थे। लेकिन सुभाष चंद्र बोस चाहते थे कि ऐसा अध्यक्ष बने जो अंग्रेजों से सत्ता छीनने के आए मौके को नहीं गंवाए। उस समय देश की प्रमुख हस्तियां भी सुभाष चंद्र बोस को ही कांग्रेस अध्यक्ष पद पर देखना चाहते थे। लेकिन गांधी जी ने पट्टाभि सीतारमैय्या को चुनाव के लिए खड़ा कर दिया। माना जा रहा था कि पट्टाभि सीतारमैय्या आसानी से चुनाव जीत जाएंगे क्योंकि उनको गांधी जी का आशीर्वाद था। लेकिन नतीजे गांधी जी को चौंकाने वाले थे। 203 वोटों से नेता जी सुभाष चंद्र बोस चुनाव जीत गए थे। लेकिन अध्यक्ष होने के बाद भी कांग्रेस के अंदर की गुटबाजी की वजह से परेशान होकर सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस से अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। 1939 में उन्होंने अखिल भारतीय फारवर्ड ब्लाक नाम से अलग पार्टी बनाई।

जीवटराम भगवानदास कृपलानी यानी जेपी कृपलानी कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में से एक थे। आजादी के समय यानी साल 1947 में कृपलानी ही कांग्रेस के अध्यक्ष थे। हालांकि उस समय के घटनाक्रमों पर नजर डालें तो नेहरू और पटेल से वो सिद्धांतों के आधार पर असहमत थे। 1950 में जब कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव हुआ तो नेहरू जेपी कृपलानी का समर्थन किया था। जबकि सरदार पटेल पुरुषोत्तम दास टंडन के पक्ष में थे। इस चुनाव में पुरुषोत्तम दास टंडन की जीत हुई। हार से नाराज और गांधी जी के सपनों को अधूरा होते देख जेपी कृपलानी 1951 से अलग हो गए। उन्होंने किसान मजदूर पार्टी बनाई। बाद में यह समाजवादी पार्टी में मिल गई। सी राजगोपालाचारी स्वतन्त्र भारत के दूसरे गवर्नर जनरल और प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल थे। सरदार पटेल के निधन के बाद उनको गृह मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। लेकिन कांग्रेस में मतभेद के चलते उन्होंने 1956 में इंडियन नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी का गठन किया था।

1959 में कांग्रेस में सबसे बड़ी बगावत हुई और पार्टी बिहार, राजस्थान, गुजरात और ओडिशा में टूट गई। इसके कुछ सालों बाद केएम जार्ज की अगुवाई में केरल कांग्रेस का गठन हुआ। 1967 में चौधरी चरण सिंह ने कांग्रेस से अलग होकर भारतीय क्रांति दल बनाया जिसे आज आरएलडी कहा जाता है। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को ही 12 नवंबर 1969 को कांग्रेस से बाहर कर दिया गया। यह कांग्रेस के इतिहास की सबसे बड़ी घटना थी। इसके बाद इंदिरा ने नई कांग्रेस (फ) बनाई। बाद में इसका नाम कांग्रेस आई रखा गया। वर्तमान में यही कांग्रेस है जिसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कहा जाता है। 1984 में राजीव गांधी से नाराज होकर विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जनमोर्चा नाम से पार्टी बनाई। जिसके बाद यह भी कई खंड-खंड हो गई जिससे जनता दल, जनता दल (यू), राजद और समाजवादी पार्टी जैसी छोटी पार्टियों का जन्म हुआ।

साल 1999 में कांग्रेस फिर एक बड़ा विद्रोह हुआ। शरद पवार ने राष्ट्रीय कांग्रेस, ममता बनर्जी ने टीएमसी और आंध्र प्रदेश में वाईएसआर कांग्रेस, जनता कांग्रेस, ओडिशा में बीजू जनता दल और जम्मू-कश्मीर में मुफ्ती मोहम्मद सईद की अगुवाई में पीडीपी का गठन हुआ। बीते साल 2021 में पंजाब विधानसभा चुनाव में पार्टी के कद्दावार नेता रहे कैप्टन अमरिंदर सिंह ने भी कांग्रेस छोड़कर पंजाब लोक कांग्रेस बनाई और कुछ दिन पहले पार्टी का बीजेपी में विलय कर दिया है। संसद में कांग्रेस का प्रमुख चेहरा रहे गुलाम नबी आजाद ने भी गांधी परिवार से अलग होकर नई पार्टी बनाने ऐलान कर दिया। चुनावों में लगातार हो रही हार और पार्टी में आमूलचूल परिवर्तन को लेकर उनकी ओर से सोनिया गांधी को चिट्ठी भी लिखी गई। इसमें पार्टी के 23 प्रमुख नेता शामिल थे। गुलाम नबी आजाद को उसी दिन से बागी गुट का नेता मान लिया गया था।

पिछले 10 साल में लगातार कमजोर होती जा रही है। कई बड़े नेता पार्टी का साथ छोड़ चुके हैं। गुलाम नबी आजाद, कांग्रेस प्रवक्ता जयवीर शेरगिल, गुजरात नेता पूर्व कांग्रेस नेता हार्दिक पटेल, नरेश रावल और राजू परमार, कपिल सिब्बल, पंजाब कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सुनील जाखड़, पूर्व कानून मंत्री अश्विनी कुमार, आरपीएन सिंह पार्टी का साथ छोड़ चुके हैं। अमर्यादित आचरण और भ्रष्टाचार कांग्रेस की नियति बन चुकी है। कांग्रेस इनके खिलाफ कोई नजीर पेश नहीं कर सकी। नेतृत्व के ढुलमुल रवैये और अनुशासन की कमी से कांग्रेस जर्जर होती जा रही है। सत्ता की लोलुपता ने कांग्रेस को देश से समेट कर चंद राज्यों तक सीमित कर दिया है। पार्टी की रीति-नीति के खिलाफ चलने वालों को कांग्रेस यदि तगड़ा सबक सिखाती तो सत्ता की खातिर टूट-फूट की नौबत नहीं आती।

(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

बस्तर में हो रहा है सुनहरा सवेरा...

नंदन जैन
प्रदेश उपाध्यक्ष, भाजपा छत्तीसगढ़

यदि बस्तर में नक्सलवाद के उभार के मूल कारणों को याद करें तो सबसे प्रमुख कारण था आदिवासियों का प्रशासनिक तंत्र द्वारा शोषण और लगातार उपेक्षा। तब की कांग्रेस सरकारें न केवल बस्तर बल्कि देश के तमाम आदिवासी क्षेत्रों के प्रति उदासीन थीं। इसी खालीपन का फायदा उठाकर आंध्रप्रदेश से आए माओवादी यहां जड़ें जमाने में सफल हुए

जब किसी भी समस्या के समाधान के प्रति नेतृत्व की इच्छा शक्ति सच्चे अर्थों में सक्रिय होती है, तो बड़ी से बड़ी चुनौती भी घुटने टेक देती है। नक्सलवाद के संदर्भ में जो परिणाम आज देश देख रहा है, वह केन्द्र और राज्य सरकारों के संकल्पित प्रयासों का ही फल है। जो बस्तर कभी लाल आतंक का प्रमुख गढ़ माना जाता था, वहां अब स्थायी शांति अपना आधार मजबूत कर रही है।

हिंसा का खेल खेलने वाले नक्सली चौतरफा सरकारी प्रयासों के चलते या तो आत्मसमर्पण कर रहे हैं या कार्रवाई में ढेर हो रहे हैं। दूसरी ओर, जिन अंदरूनी इलाकों तक दशकों तक विकास की रोशनी नहीं पहुंच सकी थी, वहां आज सड़क, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं वास्तविक रूप ले रही हैं। पिछली उदासीन सरकारों और स्वार्थी माओवादियों ने जिन आदिवासियों को छला और लोकतंत्र से दूर रखा, वही समुदाय आज विकास की मुख्यधारा में जुड़ रहा है।

भले ही नक्सलवाद अब अंतिम सांसें ले रहा हो, लेकिन इसके दशकों पुराने घाव बेहद गहरे हैं। सैकड़ों जवानों और निर्दोष नागरिकों की हत्या, विकास से पूरी पीढ़ियों को वंचित रखना और भय का वातावरण ये सब नक्सलवाद की भयावह विरासत रही है। 2000 के दशक की शुरूआत में इसकी ताकत चरम पर थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इसे देश की सबसे बड़ी आंतरिक सुरक्षा चुनौती बताया, लेकिन राजनीतिक मजबूरियों और संकल्प के अभाव में कांग्रेस सरकारें इस खतरे पर निर्णायक प्रहार नहीं कर सकीं।

उस दौर में बस्तर से लेकर राजनांदगांव, गरियाबंद और कवर्धा तक आतंक की जड़ें फैल चुकी थीं। नक्सलियों का लक्ष्य दंतेवाड़ा से दिल्ली तक लाल झंडा फहराने का था, जिसे अर्बन नक्सल नेटवर्क से भी समर्थन मिलता था। लेकिन तत्कालीन सरकारों ने इस गंभीर खतरे को नजरअंदाज कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप लगभग 200 जिले माओवादी आतंक की चपेट में आ गए और विकास बुरी तरह प्रभावित हुआ।

इसके विपरीत, आज मोदी सरकार 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है। सरकार ने स्पष्ट रूप से समझा कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों को उनके हाल पर छोड़कर देश पूर्ण विकास प्राप्त नहीं कर सकता। मजबूत इच्छा शक्ति और कठोर कार्रवाई के परिणाम आज सामने हैं। आज बस्तर ही नहीं पूरा दंडाकारण्य क्षेत्र विकास का नया अध्याय लिखने को आतुर है। यह क्षेत्र भगवान राम के वनवास काल से जुड़ा है, बस्तर में रामपाल गांव, रामाराम मंदिर (सुकमा), राकसहाड़ा और कांगेर घाटी नेशनल पार्क भी भगवान राम से संबंधित हैं। नक्सलवाद के खग्रास ग्रहण से अब बस्तर मुक्त हो रहा है। अब एक बार फिर यहां भगवान राम का गौरव स्थापित हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जी के मार्गदर्शन में विष्णुदेव साय सरकार यहां राम राज्य स्थापित के लिए संकल्पित है। यही फर्क है एक तरफ इच्छा शक्ति वाली सरकार और दूसरी तरफ उदासीन शासन की नाकामी।

लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश का विपक्ष भी इस सफलता को नकारात्मक चश्मे से देखने में लगा है। कुछ नेता यह भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं कि बस्तर में उद्योगपतियों के लिए जमीन तैयार करने हेतु नक्सलवाद का सफाया किया जा रहा है। इससे भी अधिक खतरनाक यह है कि कुछ राजनीतिक बयानबाजी नक्सलियों को आदिवासियों का संरक्षक और जंगलों का रक्षक बताने लगती है। यह सीधेझसीधे एक क्रूर, हिंसक विचारधारा को जीवित रखने की कोशिश है जो भविष्य के लिए बेहद खतरनाक संकेत है।

हाल ही में मुठभेड़ में मारे गए दुर्दांत नक्सली कमांडर हिड़मा को लेकर कुछ लोग उसके हमदर्द के रूप में सामने आए हैं। कुछ तो उसे बस्तर का रक्षक तक बताने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन इस राजनीतिक चाल से सावधान रहने की आवश्यकता है। हिड़मा कोई निर्दोष व्यक्ति नहीं था; उसके हाथ सैकड़ों लोगों के खून से सने हुए थे। ऐसे हिंसक व्यक्ति को आदर्श या प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना, उसे महिमामंडित करना-नक्सलवाद को पोषित करने जैसा ही है। यह दुर्दांत हत्यारा बस्तर का आदर्श कैसे हो सकता है?

हद तो तब होती है जब दिग्विजय सिंह जैसे बड़े कांग्रेसी नेता हिड़मा को लेकर सरकार पर सवाल खड़े करते हैं। जिनके मुख्यमंत्री रहते हुए अविभाजित मध्यप्रदेश में बस्तर को कालापानी की सजा कहा जाता था, उस दौरान ही नक्सलियों ने यहां अपनी जड़ें मजबूत कीं। दिग्विजय सिंह के शासनकाल में ही वर्ष 1995 में हिड़मा सहित कई युवा सरकारी उपेक्षा के कारण लाल आतंक की राह पर चल पड़े थे।

हमारा स्पष्ट मानना है कि भगवान बिरसा मुंडा, महान योद्धा गुंडाधुर, परलकोट के राजा गेंद सिंह और शहीद वीर नारायण सिंह ही आदिवासी समाज के वास्तविक आदर्श हैं। आदिवासी समाज हिड़मा या बसव राजू जैसे हिंसक व्यक्तियों को अपना हीरो नहीं मान सकता, क्योंकि उसकी परंपरा सदियों से इन्हीं महान नायकों को पूजती आ रही है।

यदि बस्तर में नक्सलवाद के उभार के मूल कारणों को याद करें तो सबसे प्रमुख कारण था आदिवासियों का प्रशासनिक तंत्र द्वारा शोषण और लगातार उपेक्षा। तब की कांग्रेस सरकारें न केवल बस्तर बल्कि देश के तमाम आदिवासी क्षेत्रों के प्रति उदासीन थीं। इसी खालीपन का फायदा उठाकर आंध्रप्रदेश से आए माओवादी यहां जड़ें जमाने में सफल हुए।

तत्कालीन कांग्रेस सरकार की शह पर 25 मार्च 1966 को बस्तर महराज प्रवीरचंद भंजदेव की हत्या हो या पुलिस अत्याचार इन घटनाओं ने सरकार और आदिवासियों के बीच अविश्वास की गहरी खाई बना दी। इसी खाई में माओवादियों ने अपनी जड़ें गहरी कीं और दशकों तक समानांतर शासन चलाते रहे। गौरतलब है कि प्रवीरचंद भंजदेव बस्तर में आदिवासियों में बेहद लोकप्रिय थे, वे सरदार वल्लभभाई पटेल के समक्ष विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले पहले राजाओं में से एक थे, इसके चलते पटेल के साथ उनके करीबी संबंध बन गए थे। भजदेव ने कुछ और रियासतों को भी विलय कराने में मदद की थी, इसलिए भी कांग्रेस में एक बड़े खेमे को वे चुभने लगे थे। पटेल के नहीं रहने के बाद उनके योगदान को कमतर करने की कोशिश आजादी के बाद कांग्रेस सरकारों द्वारा हुई ये किसी से छुपी नहीं है। भंजदेव का कांग्रेस नेतृत्व के साथ मतभेद का परिणाम था कि उन्होंने विधायक पद से इस्तीफा दिया था और पार्टी छोड़ दी थी इसके बाद कांग्रेस के साथ उनका मतभेद बढ़ता चला गया, आखिरकार पुलिस ने बेरहमी से गोलियां बरसाते हुए दरबार हाल के पास ही इस महानायक की हत्या कर दी गई। यह ऐतिहासिक भूल कांग्रेस आज भी दोहरा रही है नक्सलवाद के सफाए को लेकर भ्रम फैलाकर।

इसलिए आज आवश्यकता है कि इस नए भ्रमवाद से सावधान रहा जाए। नक्सलवाद के सफाए के इस निर्णायक चरण में देश को एकजुट होकर खड़ा होना चाहिए, न कि झूठे भ्रम और राजनीतिक चश्मे से इस राष्ट्रीय उपलब्धि को कमजोर करने का प्रयास करना चाहिए।

(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

खेल/विदेश/कारोबार/फिल्म

जापान की जनता का भरोसा कायमः साने ताकाइची की लोकप्रियता 75% पर, आर्थिक राहत पर जोर

(एजेन्सी)।

टोक्यो में राजनीतिक माहौल को लेकर चर्चाएँ तेज हैं, क्योंकि मौजूद जानकारी के अनुसार जापान की प्रधानमंत्री साने ताकाइची की लोकप्रियता इस महीने भी मजबूत बनी हुई हैं। निक्केई और टीवी टोक्यो के ताजा सर्वे में उनकी मंजूरी रेटिंग 75% दर्ज की गई, जो पिछले महीने की तुलना में एक प्रतिशत ज्यादा है। बता दें कि अक्टूबर में पद संभालने के बाद लगातार दूसरे महीने उनकी लोकप्रियता 70% से ऊपर बनी हुई है।

गौरतलब है कि सर्वे में ताकाइची के समर्थकों ने उन्हें भरोसेमंद बताया है। कुल 37% लोगों ने विश्वसनीयता को समर्थन का सबसे बड़ा कारण माना, जबकि 34% ने कहा कि प्रधानमंत्री का मजबूत नेतृत्व उनकी पसंद की वजह है। दूसरी ओर असहमति का स्तर एक प्रतिशत घटकर 18% पर आ गया है। असहमति जताने वालों में 35% ने कहा कि वे एलडीपी नेतृत्व वाली कैबिनेट को पसंद नहीं करते, जबकि 30% लोगों का मानना है कि कैबिनेट सदस्य भरोसे के योग्य नहीं हैं।

इसी बीच सरकार ने आर्थिक प्रोत्साहन और महंगाई से राहत से जुड़े उपायों के लिए एक अतिरिक्त बजट का मसौदा भी मंजूर किया है। यह भी बताया जा रहा है कि 35% लोग इन उपायों को महंगाई के प्रभाव को कम करने में कारगर मानते हैं, जबकि 40% की राय इससे अलग है। नीतिगत प्राथमिकताओं के सवाल पर 55% उत्तरदाताओं ने महंगाई से राहत को शीर्ष मुद्दा बताया, जबकि 32% ने आर्थिक विकास और 31% ने कूटनीति तथा सुरक्षा को प्राथमिकता देने की सलाह दी। पेंशन और रोजगार-वेतन से जुड़े मुद्दों को 26-26% लोगों ने महत्वपूर्ण माना है। बता दें कि कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री ने ताइवान पर संभावित हमले को जापान के लिए अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करने वाली स्थिति बताया था, जिस पर जनता की राय बंटी दिखाई दी। सर्वे में 55% ने इस टिप्पणी को उचित कहा, जबकि 30% ने इसे अनुचित माना।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ ताकाइची की पहली द्विपक्षीय बैठक को जनता ने सकारात्मक रूप से लिया है। कुल 69% लोगों ने इस मुलाकात को सफल बताया, वहीं 18% असहमत दिखे। राजनीतिक दलों के समर्थन के आंकड़े भी दिलचस्प रहे। प्रधानमंत्री की पार्टी एलडीपी का समर्थन 5 प्रतिशत बढ़कर 41% पर पहुंच गया है। इसके विपरीत गठबंधन सहयोगी जापान इनोवेशन पार्टी का समर्थन घटकर 5% रह गया है। विपक्षी दलों में सनसेइतो को 1 प्रतिशत बढ़त मिली है और वह 7% पर पहुंच गया है, जबकि सीडीपी और डीपीपी दोनों 6% पर टिके हैं। लगभग 22% उत्तरदाताओं ने कहा कि वे किसी भी दल का समर्थन नहीं करते, जो पिछले सर्वे के समान है।

वेंटिलेटर पर बांग्लादेश की पूर्व पीएम खालिदा जिया, हालत बेहद नाजुक

(एजेन्सी)।

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया बेहद अस्वस्थ हैं और उन्हें वेंटिलेशन पर रखा गया है। उनकी पार्टी के नेताओं ने कहा कि स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा विशेषज्ञ उनके इलाज की निगरानी कर रहे हैं। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की 80 वर्षीय अध्यक्ष ज़िया को 23 नवंबर को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जब उन्हें सीने में संक्रमण हो गया था, जिससे उनके हृदय और फेफड़े दोनों प्रभावित हुए थे। चार दिन बाद, तीन बार प्रधानमंत्री रहीं ज़िया को उनकी कई स्वास्थ्य समस्याएँ बिगड़ने के बाद कोरोनरी केयर यूनिट में स्थानांतरित कर दिया गया।

पूरे देश से प्रार्थना करने का अनुरोध करने के अलावा और कुछ नहीं किया जा सकता। बीएनपी महासचिव मिर्जा फखरुल इस्लाम आलमगीर ने भी पुष्टि की कि जिया की हालत गंभीर बनी हुई है और ढाका के अस्पताल में उनका इलाज जारी है, जहां स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा विशेषज्ञ उनकी देखभाल में लगे हुए हैं। समाचार वेबसाइट ने उनके हवाले से कहा वह काफी बीमार हैं। पूरा देश उनके स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहा है...वह गंभीर रूप से बीमार हैं और हमारे डॉक्टर हर संभव प्रयास कर रहे हैं। बीएनपी के वरिष्ठ संयुक्त महासचिव रुहुल कबीर रिजवी ने रविवार को कहा कि जिया (80) की स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आया है। बांग्लादेश के दिवंगत राष्ट्रपति जियाउर रहमान की पत्नी खालिदा जिया लंबे समय से कई गंभीर बीमारियों से जूझ रही हैं, जिनमें जिगर और गुर्दे संबंधी समस्याएं, मधुमेह, गठिया और आंखों की बीमारियां शामिल हैं। इस वर्ष वह उन्नत चिकित्सा उपचार के लिए चार महीने लंदन में रहने के बाद छह मई को ढाका लौटी थीं। उनके इकलौते बेटे एवं बीएनपी के कार्यवाहक अध्यक्ष तारिक रहमान 2008 से लंदन में रह रहे हैं। उनके दूसरे बेटे अराफात रहमान का 2025 में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था।

गुकेश 10वें पर, एरगैसी 5वें परः भारतीय शतरंज में रैंकिंग का उतार-चढ़ाव जारी, आनंद 12वें

(एजेन्सी)।

गोवा में हाल ही में संपन्न शतरंज विश्व कप में तीसरे दौर से बाहर होने के बाद, डी गुकेश नवीनतम FIDE रैंकिंग में दसवें स्थान पर खिसक गए हैं। पिछले महीने, गुकेश आधिकारिक रैंकिंग में शीर्ष दस में वापस आ गए थे और नौवें स्थान पर पहुँच गए थे। लेकिन ऐसा लग रहा है कि पिछले साल सबसे कम उम्र के विश्व चैंपियन बनने के बाद से रैंकिंग में उनका यह उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। अर्जुन एरगैसी गोवा में क्वार्टर फाइनल में वेई यी से हार गए, जिससे उन्हें 6.4 एलो रेटिंग अंक मिले, जिससे वह दुनिया में पाँचवें स्थान पर वापस आ गए। अपडेट की गई आधिकारिक FIDE रैंकिंग में, अब शीर्ष 30 में केवल पाँच भारतीय हैं। शतरंज के दिग्गज विश्वनाथन आनंद दुनिया के 12वें नंबर के खिलाड़ी हैं। वहीं, आर प्रज्ञानंदधा सातवें और विदित गुजराती 29वें स्थान पर हैं। हाल ही में, गुकेश के कोच ग्रेजगोर्ज. गजेवस्की ने उनके 2025 के अभियान के बारे में बात की और इसे एक बदलाव का दौर बताया। उन्होंने कहा कि यह उन लोगों के लिए बहुत आम बात है जो पूरी ज़िंदगी किसी चीज को हासिल करने के लिए मेहनत करते हैं और आखिरकार उसे हासिल कर लेते हैं। यह आपको एक मुश्किल स्थिति में डाल देता है क्योंकि आपको नए लक्ष्य और खुद को प्रेरित करने के नए तरीके ढूँढने होते हैं। गुकेश के लिए यह एक तरह का बदलाव का दौर है।

उन्होंने आगे कहा कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वह बहुत युवा है और प्रतिस्पर्धा बहुत कड़ी है। ऐसा नहीं है कि खिताब जीतकर उसने सभी मैच जीतने का एकाधिकार हासिल कर लिया है।

गोदरेज प्रॉपर्टीज ने 4,150 करोड़ रुपये की आवासीय परियोजना के लिए खरीदी पांच एकड़ जमीन

(एजेन्सी)।

रियल एस्टेट कंपनी गोदरेज प्रॉपर्टीज ने नीलामी प्रक्रिया के जरिये हैदराबाद में पांच एकड़ जमीन खरीदी है। कंपनी की योजना इस पर 4,150 करोड़ रुपये की आवासीय परियोजना विकसित करने की है। कंपनी ने सोमवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि उसने हैदराबाद मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी (एचएमडीए) द्वारा कोकापेट के नियोपोलिस में लगभग पांच एकड़ भूमि के लिए आयोजित ई-नीलामी में हिस्सा लिया। एमएसटीसी लिमिटेड के ई-नीलामी मंच के अनुसार गोदरेज प्रॉपर्टीज सबसे ऊंची बोली लगाने वाली कंपनी के रूप में उभरी। प्राधिकरण निर्धारित प्रक्रिया का पालन करने के बाद आवंटन पत्र जारी करेगा। कंपनी ने कहा, इस भूमि पर प्रीमियम आवासीय परियोजना विकिसित की जाएगी जिसका बिक्री योग्य क्षेत्रफल लगभग 25 लाख वर्ग फुट होगा। इससे करीब 4,150 करोड़ रुपये की राजस्व हासिल होने की संभावना है।

गोदरेज प्रॉपर्टीज के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी गौरव पांडे ने कहा, हैदराबाद में मजबूत बुनियादी ढांचे के विकास और गुणवत्तापूर्ण आवास की निरंतर मांग के साथ मजबूत प्रदर्शन जारी है। हम रणनीतिक अधिग्रहण आदि के माध्यम से इस उच्च-संभावना वाले बाजार में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। गोदरेज प्रॉपर्टीज देश के अग्रणी रियल एस्टेट डेवलपर में से एक है। इसकी दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर), मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर), पुणे, बेंगलुरु और हैदराबाद में अच्छी उपस्थिति है।

सफलता की खुशी में डूबे धनुष-कृति, पुणे के गणपति मंदिर में टेका माथा

(एजेन्सी)। अभिनेता धनुष और अभिनेत्री कृति सेनन अपनी हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'तेरे इश्क में' की सफलता का जश्न मना रहे हैं। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुई है और सोशल मीडिया पर इसे जबरदस्त तारीफ मिल रही है। दर्शक इसे दोनों कलाकारों के करियर की सबसे सफल फिल्मों में से एक मान रहे हैं। फिल्म की कामयाबी के बीच, धनुष और कृति सेनन रविवार, 30 नवंबर को आशीर्वाद लेने के लिए पुणे के प्रसिद्ध दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर पहुंचे। कृति ने इस मौके के लिए हल्के हरे रंग का कुर्ता और गोल्डन-ग्रीन पैटर्न वाला शरारा पहना था। उन्होंने अपनी ड्रेस को मैचिंग बड़ी अंगूठियों और झुमकों के साथ पूरा किया, जिसमें वह बहुत खूबसूरत लग रही थीं। धनुष ने एक सादा सफेद कुर्ता और नीली जींस पहनी थी, जबकि डायरेक्टर आनंद एल. राय ने जींस के साथ हल्के गुलाबी रंग की शर्ट पहनी हुई थी। अपनी लेटेस्ट रिलीज के बारे में मिले अच्छे रिव्यूज का एक वीडियो (मोंटाज) शेयर करते हुए, कृति ने लिखा कि अपनी फिल्म के प्रति दर्शकों के सकारात्मक प्यार को देखकर उनका दिल खुशी से भर गया है। कृति ने आगे लिखा, 'एक एक्टर के लिए सबसे अच्छी फीलिंग तब होती है जब दर्शक आपके किरदार के छोटे से छोटे अहसास और अनकहे शब्दों से भी खुद को जोड़ पाते हैं।' अपनी कैरेक्टर मुक्ति के बारे में बात करते हुए, 'दो पत्ती' एक्ट्रेस ने कहा कि यह उनके करियर का 'सबसे गहरा और मुश्किल किरदार' था।

जीवन के हर मोड़ पर साथ निभाता है प्यार

प्यार! एक छोटा-सा शब्द, पर अपने आपमें अनूठा और अनुपम है। गन्ने की मिठास, सागर की गहराई, चंद्रमा की शीतलता, सूर्य की तपन, आकाश की पवित्रता, धरा का धैर्य, नदी की चंचलता मानो सभी इस नन्हे से शब्द प्यार में सिमट गए हों। यह जिंदगी को काव्यात्मक रूप दे देता है, कठोरता को कोमलता में बदल देता है यह मानवीय भावनाओं को निकृष्ट से उत्कृष्ट बना देता है।

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा-प्रजा जेहि रुचे, सीस देई से जाए।'

प्यार! एक छोटा-सा शब्द, पर अपने आपमें अनूठा और अनुपम है। गन्ने की मिठास, सागर की गहराई, चंद्रमा की शीतलता, सूर्य की तपन, आकाश की पवित्रता, धरा का धैर्य, नदी की चंचलता मानो सभी इस नन्हे से शब्द प्यार में सिमट गए हों। यह जिंदगी को काव्यात्मक रूप दे देता है, कठोरता को कोमलता में बदल देता है यह मानवीय भावनाओं को निकृष्ट से उत्कृष्ट बना देता है।

प्यार को हम एक ही दृष्टि से न देखें तो हमें इसके ढेर सारे रूप देखने को मिलते है। सबसे पहला और अद्भुत प्यार 'वात्सल्य' होता है। यह प्यार हमें माता-पिता से ही मिल पाता है। यह नि:स्वार्थ, निष्कपट, निष्पक्ष और मासूम प्यार होता है। बच्चा जब गर्भ में रहता है तो सबसे पहले उसे माँ का ही प्यार मिलता है। माँ की उँगलियों के स्पर्श से उसे अहसास होता है कि वह इस दुनिया में पहला कदम रख रहा है, वह डरा-सहमा सा रहता है, शायद इसलिए ही रोता है पर जब वह अपनी माँ के आँचल में आता है तब मां के शरीर की गंध को,उसकी उँगलियों के स्नेह स्पर्श को पहचानकर अपने आपको सुरक्षित समझ चुपचाप सो जाता है।

इस समय न उसे धन-यश की चाह होती है न ही किसी अप्सरा की, चाह होती है तो केवल अपने माता-पिता के सामीप्य की। बचपन में मिला यह प्यार उसे अंत तक सहारा देता है। इसलिए कहा जाता है कि शैशव अवस्था में बच्चों को भरपूर प्यार देना चाहिए, यह उनके व्यक्तित्व के विकास में उचित पोषण देता है। जिस तरह एक पौधे को बढ़ने के लिए उचित वातावरण, खाद, पानी और रोशनी की जरूरत होती है, उसी तरह बच्चों के समुचित विकास के लिए अच्छे वातावरण, पौष्टिक भोजन के साथ 'उचित' प्यार की भी जरूरत होती है।

प्यार का एक दूसरा रूप है 'स्नेह'। 'स्नेह' जो हमें अपने से बड़ों, पड़ोसियों और गुरुजनों से मिलता है। स्नेह ऐसा प्यार है जो हमें हमारे सद्गुणों के कारण मिलता है। यह एक तरह का प्रतिदान होता है अर्थात बदले में मिला प्यार। हम बड़ों का सम्मान करेंगे तो हमें उनसे प्यार मिलेगा, गुरुजनों के प्रति श्रद्धा रखेंगे तो उनसे हमें स्नेह के साथ ज्ञान भी मिलेगा। 'स्नेह' के लिए किसी से जिद्द नहीं की जा सकती, उसके लिए स्वयं को तराशना और उस योग्य बनना होता है।

प्यार का एक और रूप जो अजीब है अनबूझ पहेली की तरह है। इसे आज तक कोई समझ नहीं पाया है। यह पता नहीं किस तरह दो अजनबी को बहुत करीब ला देता है। लगता है मानो यह नियति के रूप में आता है और जीवन को काव्यात्मक आलोक दे जाता है। यह वह रूप है जो भावशून्य व्यक्ति में भी भावना की हिलोरें उत्पन्न कर देता है, मन को उद्विग्न कर देता है। आदर्शों में जीने वाला कठोर हृदय व्यक्ति भी समझ नहीं पाता कि कब, क्यों और कैसे उसके हृदय की कठोर बंजर भूमि पर प्यार का अंकुरण हो गया। उसकी आकांक्षाएं, उसके सारे ऊंचे आदर्श धरे रह जाते हैं। हर किसी के बस की बात नहीं है उस महान प्यार को पाना और देना। यह प्यार दो आत्माओं का प्यार है, दैहिकता से उठकर अलौकिक प्यार है। इस प्यार में हमें प्रतिदान की आवश्यकता नहीं रहती, यह हमें समर्पण करना सिखाता है, त्याग करना सिखाता है। हमें व्यभिचार से दूरकर संपूर्ण पवित्रता की ओर ले जाता है। यह हममें नैतिक साहस लाता है। यह वह प्यार है जो राधा और मीरा ने कृष्ण से किया था। राधा जिसने शरीर, आयु के बंधन से मुक्त होकर कृष्ण को चाहा था।

उन्होंने अपने दाम्पत्य जीवन को निभाते हुए कृष्ण को अपने दिल में जगह दी थी। उनकी आत्मा ने कृष्ण की आत्मा को चाहा था। उनका प्यार कृष्ण के कर्तव्य-पथ पर बाधक नहीं बना। राधा के प्यार में अहंकार की झलक नहीं, स्वाभिमान की खुशबू मिलती है। उन्होंने अपने प्यार में दीनता नहीं आने दी। कृष्ण के गृहस्थ-जीवन में अपना अधिकार माँगने नहीं गईं पर कृष्ण के चरण उनके हृदय में अंत तक अंकित रहे। कृष्ण का थोड़ा-सा प्यार पाकर वे तो चिर-विरहणी बन गईं। महान रूसी उपन्यासकार 'तुर्गनेव' ने भी अपने से उम्र में काफी बड़ी शादीशुदा महिला को चाहा। वह महिला अपने पति को तलाक देने को तैयार नहीं हुई तो उन्होंने आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय किया पर उस महिला को कभी दिल से न निकाल सके। प्यार अपने साथी को कभी भी तकलीफ नहीं पहुँचाता है। सच्चा प्यार करने वाला अपने साथी के दु:ख को अपनाकर उसे सुख ही सुख देना चाहता है। कड़ी धूप में छतरी बन उसे छाया देना चाहता है। उसकी गलतियों को अपने सिर लेकर उसे अपमानित होने से बचाता है। अपने दोस्तों के बीच उसे वार्तालाप में नहीं लाता है, वह तो उसे सबसे छुपाकर अपने हृदय के मखमली डिबिया में संजोकर रखता है। वह अपने साथी की 'गरिमा' और 'प्रतिष्ठा' को बनाए रखता है। प्यार तो दिव्य है, यह कभी भी गलत नहीं होता है।

हां! प्यार करने वाले गलत हो सकते हैं। यह तो हम पर निर्भर है कि हमने प्यार को किस स्तर पर ले लिया है। हमारा प्यार सच्चा है तो हमें अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए कि सामने वाला भी ठीक हमारे जैसा हो। कभी-कभी प्यार हमें स्वार्थी बना देता है, हम अपने साथी से उतना जुड़ जाते हैं कि किसी का भी उनके करीब आना हम सह नहीं पाते। हम हर समय बस उसे अपने ही साथ चाहते हैं।

अपने प्यार को संजीवनी की तरह बनाएं जो जिंदगी को नई ऊर्जा दे सके, जीवन की खुशी की सांस ले सके। प्राप्त प्यार सच्चा है या झूठा, यह सोचकर अपने जीवन के अनमोल पल को व्यर्थ न जाने दें। हो सकता है आपके साथी की प्यार की गागर 'आधी ही भरी' हो, पर आपको उदारता से अपने प्यार को उसके गागर में छलकाते चले जाना है। एक दिन उनकी गागर छलकने लगेगी और आप उस प्यार के रस से सराबोर हो उठेंगे। प्यार पाना है हमें तो प्यार करना सीखना होगा। अपने अहं, स्वार्थ का त्याग करना होगा हम तभी हम अपने प्यार को वह दिव्य रूप दे सकेंगे। वर्ना तो-

'वो एक लफ्ज की खुशबू न रख सका महफूज
मैं उसके हाथ में सारी प्यार की किताब क्या देता?'

बदल रही है सास बहू की छवि

जब भी किसी लड़की की शादी होने वाली होती है तो सब से बड़ा डर उसके मन में सास की छवि को लेकर होता है। आमतौर पर सास के नाम के साथ यह धारणा जुड़ी होती है कि सास कभी मां की जगह नहीं ले सकती परन्तु आज के समय में यह भ्रम टूटता हुआ सा लगता है क्योंकि अब सास का स्वरूप बदलने लगा है। सच तो यह है कि ससुराल में पति के बाद आपकी सास ही वह सदस्य होती है जिससे आप बेहिचक अपने दिल की बातें कह सकती हैं। सास कैसी भी हो लेकिन आप अपने अच्छे व्यवहार से उन्हें अपना बना सकती हैं। आखिर उनमें भी एक मां का दिल धड़कता है। बस जरूरत है एक-दूसरे को समझने की।

सोच में आया है परिवर्तन

आज सास न तो बहू को खरी-खोटी सुनाने में विश्वास रखती हैं और न ही बहू-बेटे के बीच दूरियां बनाने का प्रयत्न करती हैं। वे बदल गई हैं और यही चाहती हैं कि जिस प्रकार वे किसी की बेटी से किसी की बहू बन कर गृहस्थी की सभी जिम्मेदारियों को निभाती आई हैं, ठीक उसी का अनुसरण उनकी बहू भी करे। कुल मिला कर वे अपनी बहू की रोल मॉडल बनना चाहती हैं।

रिश्तों से परिचित कराती हैं सास

ससुराल में सास एक ऐसी सदस्य होती है जो परिवार के प्रत्येक सदस्य के व्यवहार और आदतों से परिचित होती है। वह अपनी बहू को उन सबसे परिचित करवा कर उनके दिलों को जीतने की कला भी बताती हैं। सास द्वारा मिली जानकारी से आप सब की अच्छी तरह देखभाल कर सकती हैं और उन्हें प्रेम व सम्मान देकर उनकी प्रिय बन सकती हैं। इससे आपके व उनके रिश्तों में मजबूती आएगी।

सास होती है बेहतर काऊंसलर

सास एक मां होती है इसलिए उसे अपनी बहू अपने बच्चों की तरह ही लगती है। अगर बहू-बेटे में किसी बात को लेकर तनाव की स्थिति पैदा होती है तब सास ही दोनों में सुलह करवाने का सेतु बनती है। सास और बहू में इतना खुलापन अवश्य होना चाहिए कि बहू अपने पति या परिवार से संबंधित कोई भी परेशानी उनसे बांट सके। इससे संबंधों में निकटता बनी रहेगी। कई बार कम अनुभव के कारण बहू जिम्मेदारियां पूरी तरह नहीं निभा पाती, तब सास ही सब मैनेज करने के गुर बताती है। जब सास अपने बहू-बेटे को खुश देखती है तो वह संतुष्ट होती है क्योंकि वह आज की आधुनिक सास है।

देती हैं इमोशनल सपोर्ट

अगर आप शादी के बाद नौकरी करती हैं या घर संभालती हैं तब सास के अनुभवों से आपको बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है क्योंकि उन्होंने आपसे अधिक दुनिया देखी है। दुख और तकलीफ के क्षणों में वह इमोशनली सपोर्ट का काम करती हैं व आपकी समस्या का समाधान बड़ी समझ और धैर्य से ढूंढती हैं। इन सबके बीच वह जाने कब आपकी सुख-दुख की सच्ची सहेली बन जाती हैं और आप उनके साथ घूमने, मूवी देखने या शापिंग पर भी जा सकती हैं।

रीति-रिवाज और संस्कार सिखाती

शादी होते ही लड़की को ससुराल के रीति-रिवाजों की ही पालना करनी पड़ती है। आपकी सास उन सबसे आपको अवगत कराती है। आप खुशनसीब हैं क्योंकि सास के रहते आप की जिम्मेदारियां कुछ कम हो जाती हैं। आप बेफिक्र होकर कहीं भी घूमने जा सकती हैं। नौकरी करती हैं तो बच्चों को निशचिंत होकर उनके पास छोड़ सकती हैं। बच्चों को अकेलापन नहीं झेलना पड़ता और सबसे बड़ी बात अपनी दादी मां की स्नेह भरी छत्रछाया में वह स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं। उनमें मिल-बांट कर खाने-पीने और साथ रहने की भावना पनपती है।

सास-बहू में तालमेल है जरूरी

पति के परिवार और परम्पराओं को समझने व उनसे जुडने का सास से बेहतर कोई साधन नहीं हो सकता लेकिन आपको भी अपनी सासू मां को अपनी मां जैसा मान-सम्मान देना होगा। दोनों में किसी भी बात को लेकर छुपाव नहीं होना चाहिए बल्कि एक-दूसरे के प्रति ऐसी स्वच्छ भावनाएं छिपी हों कि बिना कहे ही वे एक-दूजे के मन की बात को भली-भांति समझ लें। जिस प्रकार आपको अपनी सास से उम्मीदें होती हैं ठीक उसी तरह उन्हें भी आप से उम्मीदें होती हैं। आज के समय में यह सच है कि जहां सास अपनी बहू के प्रति उदार हुई हैं, वहीं बहू के मन में भी सास के प्रति सम्मान की भावना बढ़ी है।

समय के साथ-साथ हो रहा है सोच में बदलाव

महिलाएं बड़ी कुशलता से घर व दफ्तर की जिम्मेदारियों को निभा रही हैं। बदलती जीवन शैली ने महिलाओं की सोच को तो बदल दिया है पर घर व दफ्तर की जिम्मेदारियां निभाते-निभाते वे कई बार संवेग में आकर कई गलत फैसले ले लेती हैं।

समय के साथ-साथ महिलाओं की सोच में काफी बदलाव आया है। अब वे बड़ी कुशलता से घर व दफ्तर की जिम्मेदारियों को निभा रही हैं। बदलती जीवन शैली ने महिलाओं की सोच को तो बदल दिया है पर घर व दफ्तर की जिम्मेदारियां निभाते-निभाते वे कई बार संवेग में आकर कई गलत फैसले ले लेती हैं। उनके मुंह से निकले अपशब्द और किया गया व्यवहार उनको दूसरों से अलग कर देता है और वह खुद ही धीरे-धीरे अकेलेपन का शिकार होकर मानसिक पीड़ा से गुजरने लगती हैं। एक ऐसी ही स्थिति उत्पन्न होती है जब किसी महिला की कोई वस्तु गुम हो जाए। अगर गुमशुदगी बड़ी हो तो पुलिस में रिपोर्ट लिखवाएं, अन्यथा खुद ही तफ्तीश शुरू कर देती हैं। अक्सर देखा गया है कि गुम हुई वस्तु को हर जगह ढूंढने के पश्चात विफल रहने पर वह किसी न किसी पर शक की सूई घुमा लेती है। यह सूई उसकी काम वाली बाई, उसी समय मिलने आए दोस्त या रिश्तेदार पर चली जाती है।

वह बहुत जल्द तलाशी लेने लगती है और बिना सोचे-समझे आवेश में आकर किसी एक पर इल्जाम लगा कर बदनामी मोल ले लेती है। कई बार हम कोई वस्तु कहीं रख कर ऐसे भूल जाते हैं मानो हमने रखी ही न हो। फिर वह कई दिनों, यहां तक कि कई महीनों या सालों के पश्चात अचानक घर से ही मिल जाती है। तब हमें अपनी गलती का एहसास होता है परन्तु कई बार वस्तु सचमुच चुरा ली गई हो और वह महिला सही अनुमान भी लगा रही हो फिर भी बिना सबूत के उस पर कौन विश्वास करेगा। उल्टा सब लोग उस स्त्री से पीछे हट जाएंगे। हर कोई उसके इल्जाम लगाने की प्रवृत्ति की वजह से उससे कतराने लगेगा। इसी कारण महिलाएं काफी समय अपनी ही कही बातों के जंजाल में फंस कर दोहरे मानसिक दबाव में धंस जाती हैं। एक तो उसकी वस्तु गुम हुई दूसरा वह तलाशी लेकर या इल्जाम लगा कर दूसरों में बदनाम हो जाती है। इतना ही नहीं कोई भी काम वाली बाई उसके घर काम करना पसंद नहीं करती चाहे वह महिला व्यवहार में कितनी भी अच्छी और दयालु क्यों न हो। ऐसे में कुछ बातों को ध्यान में रखना जरूरी है-

- सबसे पहले हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि अगर हम एक उंगली किसी एक की ओर उठाएंगे तो तीन उंगलियां हमारी तरफ भी उठेंगी। इसलिए संयम रखें, धैर्य से व्यवहार करें। किसी पर इल्जाम न लगाएं। दूसरों से वस्तु ढूंढने में सहायता मांगें।
- याद रखें जिसने आपकी चोरी की है वह आपको वस्तु कभी नहीं लौटाएगा और न ही उस वस्तु को अपने पास रखेगा। इसलिए तलाशी लेना ज्यादातर फिजूल ही होता है और बद्दुआएं देने से आपकी अपनी जुबान खराब होगी।
- अगर आपको किसी से अपना शक सांझा करना हो तो आप पति, बेटा, बेटी या मां-बाप आदि से बात करें और उनसे बात को गुप्त रखने का वायदा लें।
- हर कीमती या प्रिय वस्तु को अलमारी में रख कर ताला लगाएं और चाबी अपने पास रखें। पहले अपनी वस्तु को अच्छे से ढूंढें फिर चोरी के बारे बताएं।
- हमेशा अपनी कीमती चीज संभाल कर रखनी चाहिए या फिर उसकी जिम्मेदारी किसी को देकर जाएं।
- याद रखें इस जीवनकाल का काफी समय आप बिता चुकी हैं और कुछ ही समय बचा है। वस्तु मिले या न मिले, वस्तु साथ नहीं जाएगी, लेकिन आपका व्यवहार लोग आपके बाद भी याद रखेंगे। आप इस मानसिक स्थिति से बाहर निकलने की कोशिश करें। अब आप महसूस करेंगी कि आपने वस्तु तो गंवाई परन्तु संतुलन बना कर कई रिश्तों को गंवाने से बचा लिया। यह सोचते ही आपका मन हर्षोल्लास से भर जाएगा और आप गुम हुई वस्तु को भूलने लगेंगी।

एचआईवी एड्स को हराने के लिए जन-जन में जागरूकता फैलाना जरूरी: स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव

■ नागरिकों के साथ-साथ विशेषकर गर्भवती महिलाएं जरूर करवाएं एचआईवी की जांच

निर्मल कुमार

कैथल। हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा एक सशक्त और संवेदनशील स्वास्थ्य ढांचा विकसित किया गया है, जिसकी गुणवत्ता से एचआईवी संक्रमित का हर संभव इलाज किया जा रहा है। हम सबको मिलकर भारत को एड्स मुक्त बनाया है, इसमें आमजन की सहभागिता बहुत जरूरी है। एचआईवी एड्स एक गंभीर बीमारी है। इस बीमारी को हराने के लिए जन-जन को जागरूक करना आवश्यक है।

हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव सोमवार को आरकेएसडी पब्लिक स्कूल के हाल में विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहीं थीं। इससे पहले मंत्री आरती सिंह राव ने स्कूल परिसर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया। स्वास्थ्य मंत्री एवं अन्य अतिथिगणों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई।

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि प्रदेश में 104 आईसीटीसी केंद्र, जिनमें फरीदाबाद की मोबाइल आईसीटीसी भी शामिल हैं। हरियाणा में 24 एआरटी केंद्र हैं, जिनमें 13 नए केंद्र मेडिकल कॉलेजों में स्थापित किए गए हैं।

इसके अलावा 5 एफआईएआरटी केंद्र और 4 लिंक एआरटी केंद्र भी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इससे जीवन रक्षक दवाओं की उपलब्धता सभी क्षेत्रों में सुनिश्चित हुई है। उन्होंने कहा कि पीपीपी मोड के माध्यम से अल्ट्रासाउंड, एमआरआई और सीटी स्कैन जैसे टेस्ट एचआईवी पीड़ितों के लिए निशुल्क उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। दिसंबर 2021 से हरियाणा सरकार द्वारा एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों को 2250 रुपये प्रतिमाह की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है, जिसके तहत 54 करोड़ रुपये वितरित किए जा चुके हैं तथा इस वर्ष 27 करोड़ 78 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। एचआईवी पीड़ित व्यक्तियों को सरकारी ब्लड बैंक द्वारा निःशुल्क रक्त उपलब्ध करवाया जाता है। भारत सरकार के रेल मंत्रालय द्वारा नामित एआरटी केंद्र में उपचार के लिए एड्स के मरीजों को द्वितीय श्रेणी में 50 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है। हरियाणा राज्य में एचआईवी/एड्स संक्रमित व्यक्ति निःशुल्क कानूनी सहायता का हकदार है। हरियाणा के प्रत्येक जिले में सरकार द्वारा नशा मुक्ति केंद्र चलाए जा रहे हैं।

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि आमजन की जागरूकता और समुदाय की भागीदारी ही हमारी सफलता की कुंजी है। हरियाणा राज्य एड्स कंट्रोल सोसायटी द्वारा नियमित जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। हरियाणा में एचआईवी एड्स के अंतर्गत एक्ट 2017 लागू किया गया है। हरियाणा राज्य के छह डिविजनल कमिश्नर को लोकपाल नियुक्त किया गया है, जिसमें एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों के अधिकारों से जुड़े किसी भी उल्लंघन पर शिकायत दर्ज करने और समाधान पाने की निशुल्क व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त टोल फ्री राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1097 गुप्त रूप से जानकारी, मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करने के लिए सदैव उपलब्ध है।

इस मौके पर विधायक सतपाल जांबा, पूर्व विधायक लीला राम, गुहला के पूर्व विधायक कुलवंत बाजीगर, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सुखबीर सिंह, संयुक्त निदेशक रामकुमार शर्मा, सिविल सर्जन डॉ. रेणू चावला, निधि मोहन, हरपाल शर्मा, जगतार माजरी, डॉ. संदीप बातिश, डॉ. सचिन, डॉ. दिनेश कंसल, डॉ. नवराज, डॉ. नीरज मंगला, रामकुमार, कुशल पाल के अलावा अन्य संबंधित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

नगर पालिका राजौंद ने मैरिज पैलेस, अतिक्रमण और नगर व्यवस्था पर लिए सख्त निर्णय

■ नपा सचिव नरेंद्र शर्मा ने प्रेस कांफ्रेंस में दिए स्पष्ट निर्देश

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

राजौंद। नगर पालिका कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में नपा सचिव नरेंद्र शर्मा ने जिला प्रशासन कैथल के आदेशों के तहत नगर में व्यवस्था सुधारने के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश जारी किए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मैरिज पैलेस मालिकों को सभी विभागों से मान्य एनओसी प्राप्त करना अनिवार्य है। रात 10 बजे के बाद डीजे बजाने पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। शिकायत मिलने पर जिला प्रशासन के निर्देशानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। साथ ही मैरिज पैलेसों में प्लास्टिक की क्रोकरी के उपयोग पर रोक लगाते हुए कागज, कांच या धातु के बर्तनों का उपयोग अनिवार्य किया गया है। अपशिष्ट प्रबंधन की जिम्मेदारी भी मैरिज पैलेस मालिकों पर ही होगी।

सचिव ने नगर में बढ़ते अवैध कब्जों पर चिंता जताते हुए कब्जाधारियों से स्वेच्छा से कब्जा छोड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि यदि समय रहते कब्जे नहीं हटाए गए तो नपा प्रशासन को सरकारी व जिला प्रशासन के आदेश अनुसार अतिक्रमण और कब्जा हटाने की कार्रवाई करने पर मजबूर होना पड़ेगा। उन्होंने रेहड़ी-फड़ी और दुकानदारों को अपना सामान नालों से आगे न रखने की चेतावनी देते हुए बताया कि जल्द ही नपा सामान जब्ती का अभियान शुरू करेगी।

नगर में खराब स्ट्रीट लाइट की समस्या के समाधान के लिए उन्होंने नागरिकों से खराब लाइट की गूगल फोटो सचिव, एमई, जेई या क्लर्क को व्हाट्सऐप करने की अपील की, जिससे समस्या शीघ्र दूर की जा सके।

पीएमएवाई की बकाया किस्तों पर उन्होंने स्पष्ट किया कि 31 दिसंबर 2025 को पीएमएवाई-1 स्कीम बंद हो जाएगी, इसलिए लाभार्थी अपने दस्तावेज की कमी दूर कर जल्दी नपा राजौंद में जमा कराएं। सचिव ने बताया कि नगर में बंदर पकड़ने के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, जल्द अभियान शुरू होगा। बेसहारा गौवंश और आवारा कुत्तों के लिए भी विशेष अभियान चलाया जाएगा। असंध-कैथल मार्ग के एक हिस्से को पक्का करवाने के लिए पीडब्ल्यूडी विभाग को पत्र भेज दिया गया है। जहां-जहां सीवरेज और पेयजल पाइपलाइन दब गई है, वहां जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग से रिपेयर करवाया जाएगा। उन्होंने प्रॉपर्टी टैक्स बकाया धारकों को चेतावनी देते हुए कहा कि बार-बार निवेदन के बावजूद टैक्स न जमा कराने पर प्रॉपर्टी सील की जा सकती है।

सचिव ने कहा कि किसी भी नागरिक को परेशान नहीं होने दिया जाएगा और नपा प्रशासन नगर की सभी समस्याओं के समाधान के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

कैंट रेलवे स्टेशन पर अंतर्राज्यीय चोर गिरोह धराया, सामान बरामद

एसबी संवाददाता

वाराणसी। कैंट रेलवे स्टेशन पर चोरी रोकथाम के विशेष अभियान के तहत पुलिस ने एक साहसिक चोर गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया है। गिरोह के पास से चोरी के 55,000 रुपये नकद और ज्वेलरी सहित अन्य चोरी के उपकरण बरामद किए गए हैं, जिनका कुल मूल्य 1.1 लाख रुपये आंका गया है।

कैसे हुई गिरफ्तारी: वाराणसी कैंट रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 4 के पास बने 'रोलिंग हट के समीप जीआरपी (गवर्नमेंट रेलवे पुलिस) और आरपीएफ (रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स) की संयुक्त टीम ने संदिग्ध नजर आ रहे चार व्यक्तियों को आवश्यक बल प्रयोग कर पकड़ लिया यह कार्रवाई अपर पुलिस महानिदेशक (रेलवे), पुलिस अधीक्षक (रेलवे) और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के नेतृत्व में चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत की गई।

हरियाणा के 2 आईपीएस अधिकारियों को मिली पदोन्नति, आईजी से बने एडीजीपी

एसबी ब्यूरो प्रमुख/विजेश कुमार

पंचकूला। हरियाणा सरकार द्वारा राज्य के 1999 बैच के 2 वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों पदोन्नत किया है। सरकार द्वारा जारी आदेशानुसार आईपीएस अधिकारी सिबाश कबिराज और आईपीएस डॉ राजश्री सिंह को आईजी रैंक से अब एडीजीपी पद पर पदोन्नत किया गया है। इस संबंध में हरियाणा सरकार के गृह मंत्रालय की ओर से सोमवार शाम आदेश जारी किया गया। आपको बता दें कि आईपीएस सिबाश कविराज वर्तमान में पंचकूला पुलिस आयुक्त के पद पर कार्यरत हैं। इसके अलावा दूसरे पदोन्नति पाने वाली आईपीएस डॉ० राजश्री सिंह हैं जोकि वर्तमान समय में जिला झज्जर पुलिस आयुक्त के पद पर कार्यरत हैं।

विश्व एड्स दिवस पर महाविद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

एसबी ब्यूरो प्रमुख/विजय गर्ग

असन्ध। विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य में उपमंडल नागरिक अस्पताल असंध के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ सुबे सिंह के आदेशानुसार जीवन चानन महिला महाविद्यालय के प्रांगण में एचआईवी एड्स जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एचआईवी एड्स के प्रति जागरूकता फैलाना और इसके रोकथाम एवं बचाव संबंधी जानकारी उपलब्ध करना था। कार्यक्रम में आईसीटीसी काउंसलर रंगीराम वर्मा द्वारा विद्यार्थियों को एचआईवी एड्स के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विश्व भर में प्रत्येक वर्ष 1 दिसंबर को विश्व एड्स दिवस मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य एचआईवी एड्स के प्रति जन जागरुकता बढ़ाना व वैज्ञानिक उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाना तथा संक्रमण से प्रभावित व्यक्तियों के प्रति सम्मान, सहयोग और सहानुभूति का संदेश देना है। उन्होंने आह्वान किया कि हम भ्रम और भेदभाव को समाप्त करेगें तथा सुरक्षित व्यवहार को बढ़ावा देगें और एचआईवी प्रभावित व्यक्तियों के साथ सम्मान पूर्ण व्यवहार करेगें। इस मौके पर विद्यार्थियों ने कैंडल मार्च भी निकाला। इस मौके पर होम्योपैथी चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर समर्थ चोपड़ा ने भी एचआईवी एड्स के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। जीवन चानन महाविद्यालय के रेड रिबन क्लब की कोऑर्डिनेटर डॉ. हेमलता शर्मा ने कहा कि जागरूकता ही एड्स जैसी बीमारी से बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम है।

इस मौके पर आईसीटीसी लैब टेक्नीशियन प्रीति शर्मा ने विद्यार्थियों के एचआईवी टेस्ट भी किये। इस अवसर पर असिस्टेंट प्रोफेसर राजवंत, निधि सहित अन्य मौजूद रहे।

अमेरिका भेजने के नाम पर 45 लाख रुपये की ठगी करने के मामले में आरोपी काबू

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। विदेश भेजने के सब्जबाग दिखाकर आमजन से लाखों रुपए ठगी करने वालो आरोपियों पर एसपी उपासना के निदेर्शानुसार जिला पुलिस द्वारा लगातार शिकंजा कसा जा रहा है। ऐसे ही एक मामले में युवक को विदेश भेजने के नाम पर ठगी करने के एक मामले की जांच थाना गुहला एसएचओ एसआई रखा की अगुवाई में एएसआई संदीप कुमार की टीम द्वारा करते हुए आरोपी गांव मस्तगढ़ निवासी सतपाल सिंह को काबु कर लिया गया।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि वार्ड नं 6 चीका निवासी जसविंदर सिंह की शिकायत अनुसार गांव सुल्तानिया में उसकी दुकान है। आरोपी सतपाल सिंह व उसका बेटा ओमप्रकाश उसकी दुकान पर आते जाते रहते थे। वह भी विदेश जाना चाहता था। वर्ष 2021 में आरोपी सतपाल व उसका बेटा उसकी दुकान पर आए और कहने लगे कि परमिंद्र लालका उसका साला जो कि चंडीगढ़ में विदेश भेजने का कार्य करता है। यदि तुम्हें भी विदेश जाना है तो वह उसका अमेरिका का वीजा लगवा देगा। जिसके पांच सात

विदेश भेजने के मामले में आरोपी थाना गुहला पुलिस गिरफ्त में। (छाया: एसबी)

दिनों बाद आरोपी सतपाल सिंह, ओम प्रकाश व सतपाल सिंह की पत्नी बंसो देवी व सतपाल सिंह की लड़की भूपिंदर कौर व परमिंद्र लालका थार गाड़ी में उसकी दुकान पर आए और कहने लगे की परमिंद्र लालका ने कई लडकों को विदेश भेज दिया है। और ये तुम्हें भी अमेरिका भेज देगा। जिससे उसकी 40 लाख रुपये में सहमति बन गई। जिसके कुछ दिनों बाद उसने 25 लाख रुपये उन्हें नकद दे दिए। इसके बाद वीजा लगवाने के नाम पर आरोपियों ने उससे 20 लाख रुपये और ठगे जिसके बाद भी उसे अमेरिका नहीं भेजा गया।

पैसे मांगने पर आरोपियों ने उसके साथ गाली-गलौच व जान से मारने देने लगे। जिस बारे थाना गुहला में मामला दर्ज कर लिया गया। आरोपी सोमवार को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

उतराखंड में प्रशिक्षण लेंगे कैथल के 70 सरपंच एवं ग्राम सचिव

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। जिला परिषद द्वारा सोमवार को 70 सरपंचों व ग्राम सचिवों को उतराखंड में पांच दिवसीय प्रशिक्षण भ्रमण के लिए भेजा गया। जिला परिषद के चेयरमैन कर्मबीर सिंह कौल ने बस को झंडी दिखाकर रवाना किया। यह भ्रमण कार्यक्रम हरियाणा सरकार द्वारा पंचायत विभाग में आरजीएसए स्कीम के अंतर्गत करवाया जा रहा है। जिला परिषद के चेयरमैन कर्मबीर सिंह कौल ने कहा कि इस कार्यक्रम से सरपंचों को अपनी ग्राम पंचायतों में और भी अच्छी ढंग से कार्य करवाने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा तथा

■ जिला परिषद के चेयरमैन कर्मबीर सिंह कौल ने बस को दिखाई झंडी

आपसी तालमेल बढ़ेगा। इस कार्यक्रम में उतराखंड राज्य की दो ग्राम पंचायतों का दौरा भी करवाया जाएगा। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रम करवाते रहेंगे, ताकि सरपंचों में आपसी तालमेल और भाईचारे को बढ़ावा मिल सके। इस तरह के भ्रमण से काफी कुछ सीखने को मिलता है। इस अवसर पर डिप्टी सीईओ सुमित भी मौजूद थे।

ओबीसी बिग्रेड हरियाणा की बैठक आयोजित, कार्यकारिणी का किया विस्तार

संजना भारती संवाददाता

भिवानी। ओबीसी बिग्रेड का कारवां दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। हिसार के सफल कार्यक्रम के बाद ओबीसी बिग्रेड में पिछड़े वर्ग के नेताओं व कार्यकर्ताओं का जुड़ाव का सिलसिला जारी है। इसी कड़ी में चंद्रपाल निषाद को करनाल जिला का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इसके अलावा सुरेश कश्यप को कुरूक्षेत्र जिला का, गुरूदेव बैरागी को पलवल जिला का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। झज्जर जिला का अध्यक्ष डा. कृष्ण लाल व सचेत कुमार को प्रदेश युवा महासचिव की जिम्मेवारी सौंपी गई। बाढड़ा हल्का के गांव कारी के मनोज वर्मा को हरियाणा कर्मचारी सैल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह जानकारी ओबीसी बिग्रेड के महासचिव सुरेंद्र रोहिल्ला एडवोकेट ने भिवानी में हुई ओबीसी बिग्रेड की मीटिंग के बाद दी।

इस मौके पर ओबीसी बिग्रेड के प्रदेश अध्यक्ष राजेंद्र तंवर ने कहा कि हरियाणा सरकार हर मोर्चे पर फेल नजर आ रही है। कानून व्यवस्था के मुद्दे पर तो सरकार का बुरा हाल है। सरेआम हत्या, लूटपाट व डकैती की घटनाएं हो रही है। पिछले दिनों भिवानी शहर में एक ही दिन में 5 मोटरसाईकिल चोरी हो गई। जिसके अपराधी अभी तक नहीं पकड़े गए। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछड़े वर्ग के कोई भी संवैधानिक अधिकारों के प्रति सरकार गंभीर नहीं है। चाहे वह मुद्दा क्लास-1 व क्लास-2 का हो, या पंचायती राज में आरक्षण का मुद्दा हो। जिस प्रकार गुडगांव शहर के मेयर के चुनाव में हुआ, आने वाले दिनों में उसी प्रकार का हाल हरियाणा के अन्य शहरों में भी देखने को मिलेगा। अभी तो ये शुरूआत है, धीरे-धीरे ये सरकार पिछड़े वर्ग के आरक्षण को खत्म करने जा रही है। चाहे वो भर्ती एचकेआरएन के माध्यम से हो, जिसमें ना तो पिछड़े वर्ग का तथा ना ही अनुसूचित जाति वर्ग का कोई आरक्षण है। राजेंद्र तंवर ने कहा कि सरकार ने पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को कम करने का एक आसान रास्ता भी ढूंढ लिया है। इक्रोमिक बैक्वर्ड क्लास का जो आरक्षण 10 प्रतिशत दिया गया है, वह जनरल कैटेगरी के आरक्षण में से दिया गया है। लेकिन सरकार की चालाकी यह है कि वो 10 प्रतिशत आरक्षण पहले काट लिया जाता है और फिर एससी व बीसी को 90 प्रतिशत में से 20 प्रतिशत एससी का व 27 प्रतिशत बीसी का आरक्षण दिया जाता है, जो कि गलत है। इससे दो-तीन प्रतिशत आरक्षण एससी का तथा दो-तीन प्रतिशत आरक्षण बीसी का कम किया जा रहा है, यह सरकार की चालाकी है। आने वाली 14 दिसंबर को ओबीसी बिग्रेड की कोर कमेटी की एक मीटिंग होने जा रही है तथा उसके तुरंत बाद हरियाणा में एक बड़े आंदोलन की घोषणा कर दी जाएगी, जो हरियाणा में भाजपा सरकार की जड़े हिलाने का काम करेंगी।

इस मीटिंग में कर्ण सिंह राणौलिया पूर्व चेयरमैन माटीकला बोर्ड, श्रीकिशन बागोरिया महासचिव, करताराम कश्यप रिटायर्ड डीएसपी, सूरज सिंह बावरिया रिटायर्ड कमीश्नर, शिव कुमार जोगी, मदन वर्मा पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि नगर परिषद भिवानी, सुभाष भाटी एडवोकेट, तुलसीराम रोहिल्ला कोषाध्यक्ष ओबीसी बिग्रेड, रामकुमार प्रजापति बहादुरगढ़, मुखत्यार सिंह सदर आदि भी मौजूद रहे।

मंसूरचक के रहीपर चौर में ट्रांसफार्मर जलने से किसानों को परेशानी

एसबी ब्यूरो

मंसूरचक। स्थानीय प्रखंड क्षेत्र के समसा-दो पंचायत अंतर्गत रहीपर चौर में विद्युत ट्रांसफार्मर को जला दिए जाने से ग्रामीणों की परेशानी बढ़ गई है। ज्ञात हो कि बीते कुछ दिनों पहले राजनीतिक तहत ट्रांसफार्मर को जलाया गया है। जिसके कारण विद्युत आपूर्ति बंद हो गई है। लोगों को भारी परेशानी हो रही है। मंसूरचक मुखिया संघ के अध्यक्ष सह जिला मुखिया संघ के कोषाध्यक्ष मो.इजहार अंसारी ने बताया कि राजनीतिक के तहत ट्रांसफार्मर को जलाया गया है। पूर्व में भी बिजली विभाग के धिधुत कनीय अभियंता को कई बार शिकायत किया गया था। लेकिन उन्होंने संज्ञान में नहीं लिया। मकदमपुर निवासी आनंद राज उर्फ ननकी के द्वारा ट्रांसफार्मर को जलाया गया है। मो. इजहार अंसारी ने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि सैकड़ो किसानों को पानी पटवन में भारी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे समय में बिजली ही एकमात्र विकल्प है जिससे किसान अपनी खेती को पूरा कर सकें। बताते चले की पूर्व में भी विद्युत विभाग के कनीय अभियंता के खिलाफ मुखिया संघ के द्वारा प्रखंड कार्यालय पर धरना प्रदर्शन किया गया था। स्थानीय किसान दिलीप राय, पप्पू कुमार, दिनेश महतो, सतीश राय, सुशील पासवान, किशोर चौधरी, राम निहोरा राय सहित ग्रामीणों ने विभागीय अफसरों का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया है। ताकि समय रहते ट्रांसफार्मर को बदला जाए या फिर दुरुस्त किया जाए।

ककराला के नगर वासियों को किया जागरूक

संजना भारती ब्यूरो प्रमुख इंतजार हुसैन

बदायूं। उत्तर प्रदेश राजपूत महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार हामिद अली खान राजपूत ने लोगों से अपील की ककराला में वक्फ संपत्तियां मस्जिद मदरसे ईदगाह दरगाह कब्रिस्तान बगैरह को पहली फुर्सत में उम्मीद पोर्टल पर जाकर अपलोड करा दें जिसकी

आखिरी तारीख 4 दिसंबर है। साथ ही अभी तक जिन लोगों ने एसआईआर के फॉर्म नहीं भरे हैं वह लोग सारा काम छोड़कर एसआईआर के फार्म अपने बी. ऐल. ओ को जमा करा दें और पढ़े लिखे नवयुवक लड़के बीऐलओ का भरपूर साथ दें और साथ ही जिन भाईयों ने इस सामाजिक काम में लोगों की मदद की है उन्हें राजपूत महासंघ ने सम्मानित करने का भी निर्णय लिया है।

जर्जर भवन में बच्चे पढ़ने को विवश, सता रहा हादसे का डर

एसबी ब्यूरो प्रमुख/मृगांक शेखर सिंह

जमुई। जमुई के सदर प्रखंड अंतर्गत एक विद्यालय का है जहां स्कूली छात्र-छात्राएं जर्जर भवन में पढ़ने को विवश है। छात्र-छात्राएं सहित शिक्षक प्रशासन और सरकार से यथाशीघ्र बेहतर स्कूली भवन का मांग कर रहे हैं। जमुई सदर प्रखंड अंतर्गत उत्क्रमित मध्य विद्यालय कन्या सरारी विद्यालय का भवन जर्जर हो चुका है। विद्यालय के कमरा के छत से बरसात के दिनों में पानी टपकता है साथ ही एक कमरे का दिवाला फट गया है। जहां बच्चे हर दिन दुर्घटना की आशंका के बावजूद स्कूल आते हैं ताकि उनकी शिक्षा की भूख मिट सके। जिस स्कूल की बात की जा रही है। इस विद्यालय का भवन पूरी तरह जर्जर हो चुका है। जो कभी भी गिर सकता है। इस डर के बावजूद बच्चे रोज पढ़ने आते हैं। वहीं विद्यालय प्रबंधन का कहना है कि

विद्यालय के भवन की स्थिति को लेकर जिला शिक्षा पदाधिकारी से लेकर स्थानीय विधायक श्रेयसी सिंह तक को इसके बारे में बताया गया, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई मामले को लेकर विद्यालय प्रबंधन ने बताया कि विद्यालय में पर्याप्त कमरा नहीं रहने के कारण भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है, जहां एक कमरे में दो वर्ग क्लास के बच्चों की पढ़ाई बहुत मुश्किल से हो पाती है। बच्चे प्रतिदिन स्कूल आते हैं। पढ़ाई के साथ-साथ वे सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का भी लाभ उठाते हैं। मामले को लेकर जिला शिक्षा पदाधिकारी ने बताया कि विभाग को बेहतर विद्यालय भवन के लिए अग्रेतर कार्रवाई हेतु पत्र प्रेषित कर दिया गया है।